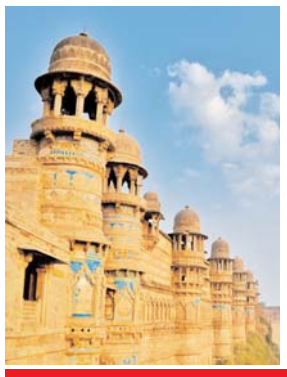

दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 317 | ग्वालियर , 10 सितम्बर रविवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

6 राज्यों की सात सीटों के उपचुनाव की मतगणना जारी

नई दिल्ली। देश के 6 राज्यों की सात विधानसभा सीटों के लिए हुए उपचुनाव के आज नतीजे आ रहे हैं. जिसके लिए वोटों की गिनती जारी है. सबकी निगाहें उत्तर प्रदेश की घोसी सीट पर टिकी हुई हैं. इस सीट के लिए हुए विधानसभा उप चुनाव में कुल 2 लाख 17 हजार मतदाताओं ने अपने वोट का इस्तेमाल किया. मतगणना के लिए कुल 14 टेबल बनाये गए हैं. मतगणना कुल 32 राउंड में होगी. मतगणना के लिए यहां 19 टीमें लगाई गई हैं. घोसी सीट पर बीजेपी और सपा समेत कुल 10 प्रत्याशी उपचुनाव के मैदान में हैं. बता दें कि इन छह राज्यों में की 7 विधानसभा सीटों के लिए हुए उपचुनाव को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारियों से जोड़कर भी देखा जा रहा है. ये उपचुनाव विपक्षी गठबंधन इंडिया के लिए बड़ा टेस्ट माना जा रहा है. बता दें कि जिन सात सीटों के बुधवार यानी 5 सितंबर को मतदान हुआ है. उनमें उत्तराखंड की बागेश्वर, उत्तर प्रदेश की घोसी, केरल की पुथुपल्ली, पश्चिम बंगाल की धूपगुड़ी, झारखंड की डुमरी और त्रिपुरा की बॉक्सानगर और धनपुर सीट शामिल हैं. वोटों की गिनती सुबह 8 बजे शुरू हुई है. आज शाम तक सभी सीटों के नतीजे जारी कर दिए जाएंगे. बता दें कि इन सात सीटों में से धनपुर, बागेश्वर और धूपगुड़ी पर बीजेपी का पहले से ही कब्जा है, वहीं यूपी की घोसी पर सपा और झारखंड की सीट पर झारखंड मुक्ति मोर्चा का कब्जा है. वहीं त्रिपुरा की बॉक्सनगर सीट और केरल की पुथुपल्ली सीट सीपीएम और कांग्रेस के पास हैं. उत्तर प्रदेश की घोसी सीट मौजूदा विधायक और ओबीसी नेता दारा सिंह चौहान के सपा छोड़कर बीजेपी में शामिल होने के बाद खाली हुई है. इसलिए इस सीट पर सभी की निगाहें टिकी हुई हैं. बीजेपी और सपा दोनों ही पार्टियां इस सीट पर जीत हासिल करने के लिए तत्पर हैं. अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी इस सीट पर एक बार फिर से कब्जा करने के लिए चुनावी मैदान में है. वहीं दूसरी ओर उत्तराखंड की बागेश्वर सीट चार बार के विधायक और कैबिनेट मंत्री चंदन राम दास के निधन के बाद इसी साल अप्रैल में खाली हो गई थी. केरल की पुथुपल्ली सीट पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता ओमन चांडी के निधन से खाली हुई थी. इस सीट पर अब किसका कब्जा होगा ये भी देखने वाली बात होगी.

उत्तर प्रदेश के मेरठ में नाले में मिला युवक का सिर कटा शव

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में शनिवार को दौराला थाना क्षेत्र में एक चौंकाने वाली घटना में एक युवक का सिर कटा शव मिला। युवक की उम्र 25 वर्ष के आसपास है। दौराला थाना प्रभारी (एसएचओ) संजय शर्मा ने कहा कि शव दौराला थाना क्षेत्र के अंतर्गत पबरसा गांव के बाहर नाले में पाया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि युवक की हत्या उसके किसी जानकार ने की है और पहचान छिपाने के लिए सिर काट दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस की फील्ड यूनिट ने काम शुरू कर दिया है। आस-पास के इलाकों के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल पर जांच कर साक्ष्य जुटाए हैं। मृतक के शिनाख्त की कोशिश जारी है।

ईडी के तीसरे समन पर भी हाजिर नहीं हुए हेमंत सोरेन

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ईडी के तीसरे समन के बाद भी पूछताछ के लिए हाजिर नहीं हुए। ईडी ने उन्हें शनिवार को रांची स्थित जोनल कार्यालय में उपस्थित होने को कहा था। लेकिन, सोरेन भारत की राष्ट्रपति की ओर से जी-20 सम्मेलन के उपलक्ष्य में आयोजित डिनर पार्टी में शामिल होने दिल्ली चले गए। बता दें कि सोरेन पहले ही ईडी को पत्र लिखकर उसकी कार्रवाई को उसके पॉलिटिकल मास्टरों के इशारे पर पूर्वाग्रह प्रेरित बता चुके हैं। उन्होंने इस मामले को लेकर ईडी के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में रिट भी लगाई है, लेकिन अब तक उस पर सुनवाई नहीं हुई है। सुप्रीम कोर्ट में सोरेन ने जो रिट पिटीशन दायर किया है, उसमें उन्होंने पीएमएलए (प्रीवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की धारा-50 और 63 को चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि ईडी को धारा-50 के तहत बयान दर्ज करने की कार्रवाई के दौरान गिरफ्तार करने का अधिकार है। इसलिए समन जारी करने के बाद गिरफ्तारी का डर बना रहता है। सीएम हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट से अनुरोध किया है कि समन को स्थगित किया जाए और पीड़क कार्रवाई नहीं करने का आदेश ईडी को दिया जाए। ईडी ने हेमंत सोरेन को जो पहला समन भेजा था, उसमें उनसे अपनी संपत्ति का विवरण दर्ज कराने के लिए जोनल कार्यालय में 14 अगस्त को उपस्थित होने को कहा गया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस किया लॉन्च

नई दिल्ली। देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में जी-20 शिखर सम्मेलन की बैठकों का दौर जारी है. जी-20 समिट के पहले दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष की उपस्थिति में ग्लोबल बॉयोफ्यूल्स अलायंस लॉन्च किया है. इसे लेकर पीएम मोदी ने कहा कि फ्यूल ब्लेंडिंग के क्षेत्र में सभी देशों को मिलकर कार्य करना चाहिए, क्योंकि ये समय की मांग है. जी-20 शिखर सम्मेलन में पीएम नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो, अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडीज और इटली के प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी की उपस्थिति में ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस% का शुभारंभ किया है. भारत में जी 20 शिखर सम्मेलन 7 पीएम नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो, अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडीज और इटली के प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी की उपस्थिति में ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस का शुभारंभ किया। ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस बनाने का लक्ष्य मजबूत बायोफ्यूल के उपयोग को बढ़ावा देना है. साथ ही ग्लोबल बायोफ्यूल के कारोबार को आसान

बनाना, इसके लिए मार्केट को मजबूत करना और तकनीकी सहायता प्रदान करने पर जोर देना मकसद है. पेड़-पौधों, भूसी, अनाज, शैवाल और फूड वेस्ट से बनने वाले ईंधन को ही बायोफ्यूल कहा जाता है. कई तरह के मायोमास से बायोफ्यूल्स को निकाला जाता है, जिसमें कार्बन काफी कम होता है. अगर विश्व में बायोफ्यूल का उपयोग ज्यादा होता है तो प्रदूषण कम होने के साथ पेट्रोल डीजल पर निर्भरता भी कम हो जाएगी. बायोफ्यूल तैयार करने के लिए अलग-अलग तरह के रिफाइनरीज का प्रयोग होता है. इसे फसलों के भंडार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है.

जयघोष से गूंज उठा भारत! जब पीएम मोदी ने पढ़ा अशोक स्तंभ का शिलालेख

नई दिल्ली। हेवम लोकसा हितमुखे ति, अथ इयम नातिसु हेवम जब पीएम मोदी के मुख ये स्वर निकला, तो पूरा दिल्ली दरबार गूंज उठा... दरअसल इस वक्त दुनिया का केंद्र बना दिल्ली ल-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है. अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, जर्मनी जैसे तमाम बड़े देश के मुखिया, भारत के मेहमान हैं. इसी बीच प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ल-20 समिट के आगाज का अंदाज सुर्खियों में हैं. दरअसल मोदी ने इस शिखर सम्मेलन की शुरुआत उस पैगाम से की जो भारत की सरजमीं से ढाई हजार साल पहले दुनिया को दिया गया था। दरअसल मोदी के मुख से निकला ये शिलालेख, दिल्ली के फिरोजशाग कोटला में मौजूद अशोक स्तंभ पर गढ़ा हुआ है, जिसे 2500

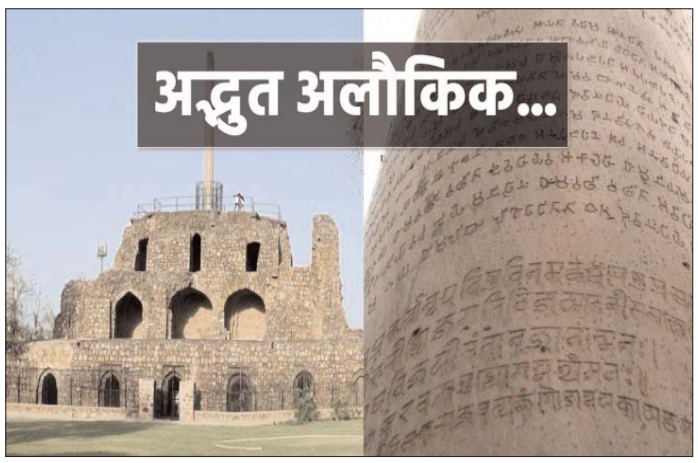

साल पहले सम्राट अशोक द्वारा स्थापित किया गया था. पाली और संस्कृत भाषा में मिश्रित ये शिलालेख, मानवता का कल्याण और सदैव सुख सुनिश्चित करना बताता है. सही सिद्धांत और जीवन की संहिता का प्रचारक रहा ये स्तंभ, अशोक के शिलालेखों का एक हिस्सा है. जो आमजन में कल्याण, दया, सहनशीलता और चिंता की बात करता है. पीएम मोदी के स्वर में गूंजा उद्धरण भी इसी स्तंभ के छठे शिलालेख का भाग है, जिसे दिल्ली-टोपरा स्तंभ के तौर पर भी पहचाना जाता है. ऐसे में अब ल-20 में गूंजे जयघोष के बाद लोग इसके इतिहास को जानना चाहते हैं... तो चलिए बताते हैं।

अद्भुत और अलौकिक इतिहास-43 फीट ऊंचाई और बलुआ पत्थर से निर्मित ये भव्य स्तंभ दरअसल दिल्ली में कभी था ही नहीं. इसे तो साल 1351 और 1388 के बीच हरियाणा के यमुनानगर जिले के टोपरा कलां से स्थानांतरित कर दिल्ली लाया गया. इसके साथ ही मेरठ के पास से एक और स्तंभ पीर-ग़ैब के पास खड़ा करवाया गया, जो आज बारा हिंदू राव अस्पताल के ठीक सामने मौजूद है. असल में वो दौर मध्ययुगीन काल थ, जब फिरोज शाह तुगलक बतौर सुल्तान दिल्ली की गद्दी पर काबिज थे. अपने शासनकाल के दौरान वो इन अशोक स्तंभ से खूब मंत्रमुग्ध हुए, लिहाजा इन्हें दिल्ली लाने का फरमान जारी किया. इसके बाद से ही ये स्तंभ दिल्ली की आन-बान-शान बन गया. इन स्तंभों पर बुद्ध से प्रेरित होने के बाद सम्राट अशोक के संदेशों को उत्कीर्ण करवाया गया है, जिसमें अलग-अलग धर्मों के बीच टकराव, जानवरों की बलि, दास और नौकरों से क्रूर व्यवहार जैसी समाज की तमाम समस्याओं का निदान बताया गया है.

सीएम गहलोत के करीबी रहे राजेंद्र गुढ़ा शिवसेना में हुए शामिल, एकनाथ शिंदे की मौजूदगी में ली सदस्यता

नई दिल्ली। पिछले दो महीने पहले राजस्थान की राजनीति में भूचाल लाने वाले गहलोत कैबिनेट से बर्खास्त मंत्री राजेंद्र गुढ़ा ने आखिरकार शिवसेना ज्वाइन कर लिया. गुढ़ा ने एकनाथ शिंदे गुट का दामन थामा है. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने गुढ़ा को अपनी पार्टी की सदस्यता दिलाई है. राजेंद्र गुढ़ा विधानसभा में लाल डायरी दिखाकर सुर्खियों में आए थे, हालांकि उन्हें इस घटना के बाद मंत्री पद से बर्खास्त कर दिया था. बता दें कि राजस्थान सरकार की कैबिनेट से बर्खास्त होने के बाद राजेंद्र गुढ़ा 24 जुलाई को एक लाल डायरी लेकर विधानसभा पहुंचे थे. दावा किया था कि डायरी में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के काले करानामों की पूरी सूची है. हालांकि, उन्हें सदन से बाहर कर दिया गया था. गुढ़ा ने कहा था कि कांग्रेस के मंत्रियों और विधायकों ने उनसे वो डायरी छीन ली. ये भी कहा था कि उनके पास डायरी का दूसरा हिस्सा भी है. राजेंद्र गुढ़ा को मणिपुर पर कांग्रेस के खिलाफ बयान देने पर उन्हें मंत्री पद से बर्खास्त कर दिया गया था. 21 जुलाई को विधानसभा में कांग्रेस नेता ब्रह्मक से मणिपुर की घटना पर सवाल पूछा था. उसी समय राजेंद्र गुढ़ा ने कहा था कि इसमें कोई दो राय नहीं है कि हम महिलाओं की सुरक्षा में असफल हो गए. राजस्थान में जिस तरह से महिलाओं पर अत्याचार बढ़े हैं, हमें मणिपुर की जगह अपने राज्य की स्थिति देखनी चाहिए. इसके बाद गुढ़ा को कांग्रेस ने मंत्री पद से बर्खास्त कर दिया. राजस्थान के झुंझुनू जिले के उदयपुरवाटी से राजेंद्र गुढ़ा विधायक हैं. उन्होंने अपने नाम के साथ अपने गांव का नाम भी जोड़ लिया उनके गांव का नाम गांव है. और इस तरह उनका नाम हो गया राजेंद्र गुढ़ा. राजेंद्र गुढ़ा 2018 के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के टिकट पर दूसरी बार विधायक निर्वाचित हुए थे. इसके बाद अपने विधायकों के साथ वह कांग्रेस में शामिल हो गए. एक वक्त था जब राजेंद्र गुढ़ा सीएम गहलोत के साथ कंधा से कंधा मिलकर रहा करते थे. 2020 में सचिन पायलट जब अपने समर्थक विधायकों के साथ हरियाणा के मानेसर चले गए थे, तब सीएम गहलोत के साथ वह डटकर खड़े थे. इसी को देखते हुए सीएम गहलोत ने उन्हें मंत्री भी बनाया था. लेकिन समय के साथ गुढ़ा और गहलोत के बीच दूरियां बढ़ने लगी. राजेंद्र गुढ़ा सचिन पायलट के समर्थन में आ गए और गहलोत के खिलाफ बयान देने लगे.

भारत की बड़ी सफलता, नई दिल्ली लीडर्स घोषणा पत्र पर लगी मुहर

नई दिल्ली। जी 20 देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में दो दिवसीय जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन जारी है.

जी-20 समिट के पहले दिन यानी शनिवार को भारत को बड़ी सफलता मिली है. इस कार्यक्रम में सभी सदस्य देशों से नई दिल्ली जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन के घोषणा पत्र को मंजूरी मिल गई है. इसे लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से खुद इसकी जानकारी साझा की है. आइये 10 प्वाइंट में इस घोषणा पत्र की विशेषताओं के बारे में समझते हैं.

भारत में ल20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि एक खुशखबरी मिली है कि हमारी टीम के कठिन परिश्रम और आप सबके सहयोग से जी 20 लीडर समिट के डिक्लेरेशन पर सहमति बन गई है. मेरा प्रस्ताव है कि लीडर्स डिक्लेरेशन को भी अपनाया जाए. मैं भी इस डिक्लेरेशन को अपनाने की घोषणा करता हूं. भारत में ल 20 शिखर सम्मेलन 7 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, एक खुशखबरी मिली है कि हमारी टीम के कठिन परिश्रम और आप सबके सहयोग से जी 20 लीडर समिट के डिक्लेरेशन पर सहमति बनी है।

भारत-भारतः वैश्विक नेताओं की तारीफ सुन बौखलाया पाकिस्तान

इस्लामाबाद। भारत में जी20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान को पच नहीं रहा है। यही कारण है कि वह इस मौके का इस्तेमाल भारत के खिलाफ जहर उगलने के लिए कर रहा है। पाकिस्तान ने भारत में जी20 शिखर सम्मेलन के लिए जुटे मेहमानों की भारी भीड़ देख एक बार फिर कश्मीर राग अलापा है। पाकिस्तान ने आरोप लगाया है कि भारत जम्मू और कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों और मानवीय कानूनों का उल्लंघन कर रहा है। पाकिस्तान ने भारत से अपने दायित्वों का सम्मान करने की अपील की। हालांकि, पाकिस्तान ने इस मौके पर पीओके के वर्तमान हालात और विरोध प्रदर्शनों पर जरूर चुप्पी साध ली।

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और गिलगित बाल्टिस्तान में इन दिनों पाकिस्तान के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश है। इस इलाके के लोग पहले से ही पाकिस्तान की उपेक्षा को सहन कर रहे थे। लेकिन, पाकिस्तान ने इस इलाके में बिजली की कीमतों में जबरदस्त बढ़ोत्तरी कर लोगों के जेब पर डाका डाल दिया। इस इलाके के कई लोगों ने बिजली के बिलों को सार्वजनिक तौर पर जलाकर सरकार के प्रति गुस्से का इजहार किया। गिलगित बाल्टिस्तान में तो लोग भारत का झंडा फहरा रहे हैं। इस इलाके में रहने वाले शिया मुस्लिम, बहुसंख्यक सुन्नी समुदाय के अत्याचारों से त्रस्त हैं। उन्होंने कई बड़ी रैलियां कर खुद को भारत में मिलाने की आवाज बुलंद की है। इसके बावजूद पाकिस्तान के विदेश कार्यालय की प्रवक्ता ने साप्ताहिक ब्रीफिंग में आरोप लगाया कि भारत ने जम्मू और कश्मीर पर अवैध तरीके से कब्जा किया है। जबकि, सच्चाई यह है कि पीओके और गिलगित बाल्टिस्तान समेत पूरा जम्मू और कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। इसे संयुक्त राष्ट्र समेत दुनियाभर के देश भी मान्यता देते हैं। इसके बावजूद पाकिस्तान ने प्रॉपगैंडा में माहिर कथित मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल का हवाला देकर जी20 में शामिल होने भारत आए मेहमानों का ध्यान खींचने की नाकाम कोशिश की। पाकिस्तान ने जी-20 के सदस्य देशों और संगठनों को खुला पत्र लिखकर भारत के खिलाफ भड़काने की पूरी कोशिश की है। पाकिस्तानी प्रवक्ता ने कहा कि इस पत्र में जम्मू और कश्मीर में कथित तौर पर चल रही दमनकारी नीतियों का उल्लेख किया गया है। पाकिस्तान ने इस पत्र में भारत पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण सभा पर प्रतिबंध, स्वतंत्र मीडिया और नागरिक समाज समूहों पर कार्रवाई का आरोप लगाया है। पाकिस्तान ने कहा कि चूंकि भारत जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है और खुद को वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में प्रस्तुत करता है, इसलिए उसे अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार और मानवीय कानूनों के तहत अपने दायित्वों का सम्मान करना चाहिए।

पिछोर नेशनल लोक अदालत में लंबित प्रकरणों का हुआ निराकरण

संवादाता हरिओम परिहार शिवपुरी

पिछोर राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली म प्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण शिवपुरी के अध्यक्ष एवं प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश दीपक गुप्ता तथा सचिव श्रीमती अर्चना सिंह के निर्देशानुसार एवं अध्यक्ष जिला न्यायाधीश पिछोर आर एम भगवती के मार्गदर्शन में 9 सितंबर शनिवार को नेशनल लोक अदालत का आयोजन तहसील पिछोर के न्यायालय में किया गया नेशनल लोक अदालत में अपराधिक, सिविल,विद्युत अधिनियम, मोटर दुर्घटना, दावा, नगर पालिका, बैंक प्रकरण, बीमा कंपनियों के प्रकरण, निगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट एक्ट के अंतर्गत चेक बाउंस प्रकरण एवं अन्य राजीनामा योग्य पेंडिंग तथा प्रिलिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण आपसी सुलह समझौते से किया गया उक्त नेशनल लोक अदालत का शुभारंभ सरस्वती मां के चित्र पर न्यायाधीश द्वारा माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर किया गया जिसमें

न्यायाधीश हरि ओम अतलसिया अतिरिक्त जिला न्यायाधीश, अमनदीप सिंह छाबड़ा अतिरिक्त व्यवहार न्यायाधीश वर्ग 1, सुश्री नेहा प्रजापति व्यवहार न्यायाधीश वर्ग 2 पिछोर एवं अभिभाषक संघ के वरिष्ठ अभिभाषक न्यायालय के कर्मचारी तथा बैंक,विद्युत विभाग आदि के कर्मचारी के अलावा नेशनल लोक अदालत की न्यायिक खंडपीठ के सुलहकर्ता सदस्य अधिवक्ता आदि उपस्थित रहे जानकारी के अनुसार उक्त नेशनल लोक अदालत में पिछोर में 4 न्यायियक खंडपीठों का गठन किया गया जिसमें प्रिलिटिगेशन प्रकरण 3186 रखे गए जिनमें से 118 प्रकरणों का निराकरण किया गया जिन प्रकरणों में कुल 1023342 रू सेटलमेंट राशि जमा हुई तथा कुल 118 व्यक्ति लाभांवित हुए न्यायालय में लंबित प्रकरणों में 470 प्रकरणों को रखा गया जिनमें से 84 प्रकरणों का निराकरण किया गया तथा कुल 221 व्यक्ति लाभांवित हुए एवं कुल 83 07860 रू की सेटलमेंट राशि जमा हुई।

पुलिस थाना पिछोर ने मारपीट के दो प्रकरण में लोक अदालत में कराया राजीनामा

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर। ग्राम राजपुर के अजीब लोधी व नरेश लोधी के मध्य कराया राजीनामा ।झगड़ा के मात्र 40 दिन के अंदर कराया राजीनामा । पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश कुमार सिंह भदौरिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले, एसडीओपी पिछोर श्री प्रशांत शर्मा के निर्देशन में व थाना पिछोर टीआई शिव सिंह यादव के नेतृत्व में पुलिस थाना पिछोर ने दो पक्षों में मारपीट के क्रॉस प्रकरण में लोक अदालत में कराया राजीनामा । दिनांक 2/8/23 को फरियादी अजीब लोधी निवासी राजपुर ने आरोपी नरेश लोधी निवासी राजपुर के विरुद्ध मारपीट की रिपोर्ट की थी जिस पर से थाना पिछोर में अपराध क्रमांक 416/23 धारा 324, 323, 294, 506 आईपीसी पंजीबद्ध किया एवं दिनांक 2/8/23 को ही फरियादी नरेश लोधी निवासी राजपुर ने आरोपी अजीब लोधी निवासी राजपुर के विरुद्ध मारपीट की रिपोर्ट की जिस पर से अपराध क्रमांक 417/23 धारा 323, 294 ,506 आईपीसी पंजीबद्ध किया । दोनों पक्ष में मारपीट का झगड़ा पुरानी रंजिश व पैसे के लेनदेन को लेकर हुआ था। पुलिस थाना पिछोर ने दोनों पक्ष में झगड़ा के 40 दिन के अंदर आज लोक अदालत श्रीमान अमनदीप सिंह छाबड़ा जेएमएफसी पिछोर न्यायालय के समक्ष राजीनामा कराया एवं दोनों पक्ष ने भविष्य में लड़ाई झगड़ा नहीं करने का वादा किया। समाधान योजना व लोक अदालत में पक्षकार भविष्य में भी समझौता बिना किसी शुल्क के कर सकते हैं। पिछोर की टीम के एस आई विनोद भार्गव, एएसआई शैलेंद्र सिंह चौहान ,प्रधान आरक्षक संतोष यादव आरक्षक प्रदीप कौरव की सराहनीय भूमिका रही।

पुलिस थाना पिछोर की धरपकड़ के खिलाफ कार्यवाही जारी

पुलिस थाना पिछोर ने फरार चल रहे स्थाई वारंटी को किया गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर। पुलिस अधीक्षक महोदय रघुवशं सिंह भदौरिया के द्वारा आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए चलाए जा रहे फरार स्थाई गारंटीयों की धडपकड़ के अभियान में अति पुलिस अधीक्षक संजीव मुले व एस डी ओ पी प्रशांत शर्मा जी के मार्गदर्शन में निरीक्षक शिव सिंह यादव के नेतृत्व में थाना पिछोर के अपराध क्रमांक 134/18धारा 294, 323, 341, 506, 34 मे फरार स्थाई वारंटी रामकेश लोधी पुत्र वीरेन लोधी उम्र 25 साल निवासी नाद थाना पिछोर को किया गिरफ्तार, जिसे माननीय न्यायालय पेश किया जा रहा है उक्त कार्रवाई में थाना प्रभारी पिछोर निरीक्षक शिव सिंह यादव,चौकी प्रभारी हिम्मतपुर उनि नितिन भार्गव, प्रधान आरक्षक घनश्याम सिंह ,आरक्षक ब्रजराज प्रदीप, सैनिक परमाल की अहम भूमिका रही।

चाचौड़ा विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का किया जा रहा है आयोजन

योगेश शर्मा राजोरिया

विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा दिनांक 10 को बीनागंज कन्या महाविद्यालय वीसीमें लगने वाले स्वास्थ्य शिविर का आयोजन की तैयारी लगभग पूर्ण हो गई है इस शिविर में क्षेत्र के लगभग 10 से 15000 लोगों का निशुल्क परीक्षण किया जावेगा एवं जिन्हें भर्ती करने की जरूरत होगी उन्हें भोपाल चिरायु हॉस्पिटल में भर्ती कर इलाज किया जावेगा विधायक लक्ष्मण सिंह जी क्षेत्र की जनता के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए हमेशा चिंतित रहे पूर्व में चाचौड़ा में अस्पताल में बाउंड्री वॉल एवं ट्यूबवेल की व्यवस्था की गई थी स्कूलों में भी फर्नीचर कंप्यूटर उपलब्ध कराए गए हैं विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा चाचौडा को जिला बनाने की मुहिम भी जारी है चाचौडा आगर जिला बनता है तो चचाचौडा का चहु मुख विकास संभव है।

कलेक्टर ने सीएसआर के अंतर्गत मेडिकल वैन का शुभारंभ किया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

मेडिकल वैन द्वारा मुफ्त में प्रदान की जायेगी दवा एवं जांच की सुविधाभिण्ड । कलेक्टर संजीव कुमार श्रीवास्तव ने सी.जी.पॉवर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशन लिमिटेड द्वारा सीएसआर के अंतर्गत मेडिकल वैन का शुभारंभ कर हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।इस मेडिकल वैन में डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ मुफ्त दवाई एवं जांच की सुविधा उपलब्ध है। यह सारी सुविधा मुफ्त में प्रदान की जायेंगी। यह वैन भिण्ड जिले के ग्रामों में मेडिकल की सुविधा उपलब्ध कराएगी।यह वैन एक दिन में दो गाँव में जायेगी तथा कम से कम 100 मरीजों का इलाज करेगी। सी.जी. पॉवर ने यह मेडिकल वैन वोकहार्ट फाउंडेशन के साथ मिलकर तैयार की है।इस दौरान सी.जी. पॉवर के फैक्ट्री प्रमुख आनंद भानपुरकर एवं एच.आर. प्रमुख जगवीर सिंह राठौर तथा डी.आई.सी. के महाप्रबंधक अमित शर्मा, मैनेजर अरुण खरे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कल मौ नगर में भारतीय जनता पार्टी द्वारा जन आशीर्वाद यात्रा निकाली जाएगी जिसमें पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष मरजाद सिंह यादव जी को यात्रा के प्रभारी बनाया गया

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ
डॉ बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में भारतीय जनता पार्टी द्वारा बैठक रखी गई जिसमें कल भारतीय जनता पार्टी द्वारा जन आशीर्वाद यात्रा निकाली जाएगी इसके बारे में समस्त मंडल के कार्यकर्ताओं से चर्चा हुई एवं चर्चा होने के बाद सभी कार्यकर्ता लोगों से जन आशीर्वाद यात्रा के बारे में चर्चा करने के लिए निकल चुके कल मौ नगर यात्रा में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा, गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा जी, सांसद मनोज तिवारी जी , गोहद विधानसभा प्रत्याशी लाल सिंह आर्य आदि कई कार्यकर्ता यात्रा में शामिल रहेंगे आज की बैठक में यात्रा के प्रभारी धोरी यादव जी, रामकुमार शास्त्री जी,नगर परिषद अध्यक्ष सज्जन सिंह यादव जी, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष मुकेश भारद्वाज जी, मंडल अध्यक्ष गोपाल कुशवाहा जी, जिला मंत्री फरेंद्र सिकरवार जी, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष राम यादव जी,नगर परिषद उपाध्यक्ष पंकज कुशवाहा जी, पूर्व मंडल अध्यक्ष हरनारायण कुशवाहा जी, पार्षद वीरेंद्र यादव जी, पूर्व उपाध्यक्ष पप्पू यादव जी, महामंत्री राजू मिश्रा, सुल्तान मौर्य जी, रामू कुशवाहा जी, पार्षद प्रमोद यादव जी, गिर्राज यादव, आदि कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे

आमजन को धोखा देने वाली भाजपा किस मुंह से मांग रही है जनआशीर्वाद : खिजर कुरैशी

दैनिक पुष्पांजली टुडे

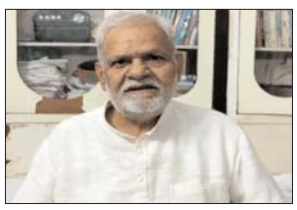

भिण्ड । मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष खिजर मोहम्मद कुरैशी ने भाजपा सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में पिछले 18 वर्षो से भाजपा के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सरकार है, जिसमें बेरोजगारी, भृष्टाचारी ,घोटाले,अपराध ब? है। रोजगार देने के नाम पर व्यापम घोटाले,पीएमटी,नर्सिंग,शिक्षक और पटवारी परीक्षा में फर्जीवाड़ा कर उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। प्रदेश का युवा रोजगार की तलाश में भटकने को मजबूर है । युवाओं का भविष्य चौपट करने वाली शिवराज सरकार किस मुंह से जन आशीर्वाद यात्रा निकाल रहीं है।श्री कुरैशी ने कहा कि श्री कमलनाथ सरकार का 15 माह का अच्छा कार्यकाल भाजपा के 18 साल के भृष्ट कार्यकाल पर भारी है।भाजपा शासन में बहिन - बेटियां सुरक्षित नहीं हैं और किसान कर्ज के बोझ तले डूबा हुआ है। श्री कुरैशी ने कहा कि भाजपा नेताओं को जन आशीर्वाद यात्रा की जगह जनता से माफी मांगते हुए प्रायश्चित यात्रा निकालनी चाहिए।

चन्दनपुरा पर हुई हत्या के 40 हजार के ईनामी 6 आरोपीगणो को किया गिरफ्तार

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । दिनांक 05/09/23 को शाम 6-30 बजे रसकलाल मैरिज गार्डन के सामने वाली गली में नीलेश जाटव की गोली मारकर हुयी हत्या का खुलासा किया जाकर हत्या में शामिल 06 आरोपीगणों को गिरफ्तार किया गया है।नीलेश जाटव की हत्या की कमान स्वयं

घटना में प्रयुक्त हथियार व वाहन बरामद,एक आरोपी पर एनएसए के तहत सिटी कोतवाली में कार्यवाही की गई

पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री ने हाथ में लेकर,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक व नगर पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार उईके के नेतृत्व में टीम गठित कर आरोपीगणों की शीघ्र अतिशीघ्र गिरफ्तारी का कार्यभार सौंपा गया। आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु सभी आरोपीगणों पर पुलिस अधीक्षक भिण्ड द्वारा 10-10 हजार रूपये का इनाम घोषित किया गया। आरोपीगण अपराधी एवं शातिर प्रवृत्ति के व्यक्ति है जो घटना दिनांक से फरार होकर गिरफ्तारी से बचने के लिये छिप गये थे जिनके लिये पुलिस अधीक्षक भिण्ड द्वारा थाना सिटी कोतवाली, सायबर सेल भिण्ड को थाना देहात के साथ आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु टीम में लगाया गया। उक्त टीमों द्वारा घटना के बाद से ही घटनास्थल के आसपास मुखबिर तंत्र सक्रिय कर दिया गया एवं सायबर सेल भिण्ड से तकनीकि सहयोग लिया। उक्त टीमों द्वारा लगातार संभावित स्थानों पर दबिश दी गयीं।दिनांक 08/09/23 को सक्रिय मुखबिर से सूचना प्राप्त हुयी कि घटना में शामिल आरोपीगण मुडियाखेडा में एक घर में छिपे हुये है और सुबह भागने की फिराक में है। उक्त सभी टीमों द्वारा सूचना से पुलिस अधीक्षक एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को अवगत कराया तथा नगर पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार उईके के नेतृत्व में छिपे हुये स्थान की घेराबन्दी की और घटना में शामिल 06 आरोपीगणों को गिरफ्तार किया गया। जिनके कब्जे से घटना में प्रयुक्त दो 315 बोर के कटटे व दो 315 बोर के खाली खोखे एक प्लेटिना मोटरसाईकिल, एक हुण्डई औरा कार को बरामद किया गया। घटना में शामिल अन्य आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु दबिश दी जारी है।जप्तशुदा मसरूका दो 315 बोर के कटटे,दो 315 बोर के खाली खोखेएक मोटर साईकिल बजाज प्लेटिना एक हुण्डई कम्पनी की औरा कार को जप्त किया।

सराहनीय भूमिका :अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक,नगर पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार उईके, निरीक्षक सुधीर सिंह कुशवाह, उपनिरीक्षक सुनील सिकरवार,अजय यादव, अरविन्द सिकरवार,प्रधान आरक्षक गुरूदास, सोनेन्द्र,सुमित तोमर, रामरतन, आरक्षक सन्दीप राजावत,मदन गोपाल सुबेन्द्र, कुलदीप कसौटिया सिटी कोतवाली टीम उपनिरीक्षक अतुल भदौरिया, प्रधान आरक्षक अवधेश चौहान, आरक्षक दीपक राजावत,अभिषेक यादव ।

सायबर सेल टीमः उपनिरीक्षक दीपेन्द्र यादव,शिवप्रताप सिंह राजावत, एएसआई सत्यवीर सिंह,प्रधान आरक्षक प्रमोद पाराशर,यतेन्द्र सिंह,आरक्षक महेश सिंह,आनन्द दीक्षित,राहुल यादव एवं बारासों थाना प्रभारी उपनिरीक्षक सीपीएस चौहान आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

धूम-धाम से मनाई कृष्ण जन्माष्टमी

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरु / श्री कुमावत समाज बेंगलूरु सिटी द्वारा जन्माष्टमी समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया। रात्रि भजन संध्या के बाद सुबह स्वागत समारोह में मुख्य अतिथि बेंगलूरु सेंट्रल से सांसद पीसी मोहन और गोवर्धनलाल दुबलदिया का समाज द्वारा स्वागत किया गया। कुमावत समाज बेंगलूरु सिटी के अध्यक्ष माणकचंद सिन्दड, राजूराम अडाणिया, बालकृष्णा मेहरोता, बंसीलाल दुबलदिया, चंपालाल लारणा, संपतराज चांदोरा, जुझार जकीया, चम्पालाल दुबलदिया, मदनलाल मोटावत, ओम प्रकाश अडाणिया, गणपत मेहरोता, देवाराम रोटागण, सत्यनारायण भोमावत, बाबूलाल दुबलदिया, अणदाराम अडाणिया, भगाराम डैया, गोविंद मोटावत, नेमीचंद बावलेचा, रमेश कुमार लिम्बा, कालुराम कुमावत और समस्त सिटी समाज के ट्रस्टी एवं सदस्यगण और महिला मंडली उपस्थित रही।

मनोहारी झांकियों संग हर्षोल्लास से मनाई कृष्ण जन्माष्टमी

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू । मैसूर रोड़ स्थित सीरवी समाज केंगेरी आईमाता मंदिर में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया गया ।जन्माष्टमी के दिन बच्चों के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें 120 बच्चों ने हिस्सा लिया। बच्चों के कार्यक्रम के कैप्टन भारती भाई निर्मला बाई हेमा देवी ने संस्कृत कमेटी के सदस्यों के रूप में बच्चों का सेलेक्शन किया। बच्चों ने राधा कृष्ण की मनमोहक झांकी प्रस्तुत की और सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने बांसुरी व मटकी सजावट तथा पेन्टिंग ,डांस सहित अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर दही- हांडी कार्यक्रम में युवाओं की टोली ने खूब धमाल मचाया। जयकारों के गूंज के बीच हाथी घोड़ा पालकी ,जय कन्हैयालाल की भजनों की प्रस्तुति पर उपस्थित श्रद्धालु भावविभोर होकर झुमने लगे इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष कन्हैया लाल लचेटा, सचिव सुरेश देवड़ा एवं पूरी कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य मौजूद रहे ।कार्यक्रम की व्यवस्था नवयुग मंडल अध्यक्ष मनोज चेतन लचेटा गौतम सिंदडा ने व्यवस्था संभाली।

कर्मठ जुझारु नेताओं ने बड़-चड़कर कर लिया हिस्सा

आज दिनांक 9 सितंबर को फूलबाग चौराहे पर उप्र की चुनाव जीत पर ग्वालियर के कर्मठ जुझारु नेताओं ने बड़-चड़कर कर हिस्सा लिया पार्टी के वरिष्ठ नेतागणों ने इसमें पूरे जोश से हिस्सा लिया खुशियां मनाते हुए पार्टी के नेताओं ने लड्डू बांटकर अपनी खुशियां जाहिर की। खुशियां बांटने मनाने वालों में: इन्दर सिंह गुर्जर-अध्यक्ष, महानगर अध्यक्ष राजेश यादव, म.प्र. सचिव धीरेन्द्र सिंह यादव, पूजा कुशवाह, कार्यकर्ता, किरन कुशवाह, रणवीर यादव, जीते यादव, नरेश यादव, अशोक यादव, कल्पना सिसौदिया, रोली सिसौदिया

खेलो इंडिया की तर्ज पर खेलो एमपी यूथ गेम्स होंगे

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । ब्लॉक मेहगांव मे 11 से 14 सितंबर तक चयन प्रक्रिया होगी तैराकी, वेट लिफ्टिंग, कुश्ती,टेबल टेनिस, योगासन, वालीबॉल, कबड्डी ,खो-खो, शतरंज आदि खेल पर प्रदेश में खेलो एमपी यूथ ब्लॉक, जिला एवं संभाग स्तर पर गेम्स का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन जिलाधीश संजीव श्रीवास्तव एवं पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री एवं जिला खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी जोसेफ बाक्सला, रामबाबू कुशवाह की निगरानी में किया जाएगा । यह जानकारी खेल एवं युवा कल्याण विभाग के जिला खेल प्रशिक्षक संजय सिंह ने बताया जिले के सभी ब्लॉक में यह आयोजन किया जाएगा 15 सितंबर तक चयन प्रक्रिया की जाएगी। खेलो एमपी यूथ गेम्स में कुल 16 खेल ब्लॉक, जिला एवं संभाग स्तर पर होंगे।अन्य 6 खेल सीधे राज्य स्तर पर सहभागिता करेंगे। प्रतियोगिता में जिनकी आयु 31 दिसंबर 2023 को 18 वर्ष तक होगी वे खिलाड़ी भाग ले सकेंगे। 18 खेलो में एथलेटिक्स, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, बॉक्सिंग, फटबॉल, हॉकी, जूडो, कबड्डी, खो-खो, मलखम, ताईक्वांडो, फेसिंग, रोइंग, कायाकिंग, कैनोइंग, शूटिंग एवं आर्चरी प्रदेश में कम प्रचलित हैं एवं उनकी अधोसंरचना उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है ऐसे खेलों का आयोजन राज्य स्तर पर किया जाएगा। राज्य स्तर पर सर्वाधिक विजेताको ओवर ऑल चैंपियनशिप की ट्रॉफी दी जाएगी। प्रत्येक खेल में बालक एवं बालिका खिलाड़ी को बेस्ट एथलीट से सम्मानित किया जाएगा। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए ब्लॉक प्रभारी एवं जिला खेल प्रशिक्षक संजय सिंह जिनका मोबाइल नंबर 7987176296 है,उनसे संपर्क कर सकते हैं।

शनिवार को सिविल न्यायालय खरगोन में नैशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया

खरगोन जिले मुन्ना खान
पुष्पांजली टुडे

माननीय राष्टीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के निर्देशानुसार तथा माननीय श्री एस.के.जैन, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/अध्यक्ष महोदय, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मण्डलेश्वर के मार्गदर्शन में दिनांक 09 सितम्बर 2023 (शनिवार) को सिविल न्यायालय खरगोन में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ प्रातः 10:30 बजे श्री जी.सी.मिश्रा, प्रथम जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति द्वारा अन्य न्यायाधीशगण के साथ दीप प्रज्जवलन कर किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम में न्यायालय में पदस्थ समस्त न्यायाधीशगण, एस.डी.एम. श्री भास्कर गाचले, एस.डी.ओ.पी. श्री रोहित लखारे, लीड बैंक मैनेजर श्री सुमेरसिंह सोलंकी, कार्यपालन यंत्री विद्युत विभाग श्री सौरभ साहु, नगरपालिका से श्री महेश वर्मा, दूरसंचार विभाग से श्री गौरीशंकर प्रसाद, बाल कल्याण समिति अध्यक्ष श्रीमती सुधा मोयदे, इनरव्हील क्लब अध्यक्ष श्रीमती ममता भण्डारी व न्यायालय, विद्युत विभाग, नगर पालिका, बैंक, बी.एस.एन.एल. विभाग के कर्मचारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री जी.सी.मिश्रा, प्रथम जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति खरगोन द्वारा अन्य विभागों से उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों व पक्षकारगण से अधिक से अधिक प्रकरणों का नेशनल लोक अदालत में राजीनामा के माध्यम से निराकरण कर नेशनल लोक अदालत को सफल बनाने में सहयोग करने हेतु आव्हान किया गया। उक्त नेशनल लोक अदालत में तहसील न्यायालय खरगोन अंतर्गत कुल 06 खण्डपीठों द्वारा न्यायालयीन लंबित मामलों में से आपराधिक शमनीय 24 प्रकरण, पराक्राम्य लिखित अधिनियम की धारा 138 के 51 प्रकरण, मोटर दुर्घटना दावा क्षतिपूर्ति 35 प्रकरण, वैवाहिक 25. प्रकरण, श्रम विवाद 11 प्रकरण, विद्युत बिल 22प्रकरण, अन्य दिवानी 9 प्रकरण व अन्य 29 प्रकरण तथा प्रीलिटिगेशन (मुकदमा पूर्व) मामलों में बैंक रिकवरी 24 प्रकरण, विद्युत बिल 31 प्रकरण, जल कर व संपत्ति कर 314 प्रकरण व अन्य 12 प्रकरणों का निराकरण किया गया । नेशनल लोक अदालत में न्यायालय में लंबित 206 प्रकरणों का निराकरण किया जाकर राशि रू. 48335694/- का अवार्ड पारित किया गया एवं प्रीलिटिगेशन के 381 प्रकरण व राशि 2240898/- इस प्रकार कुल 587 प्रकरणों का निराकरण किया जाकर राशि रू. 50576592/- का अवार्ड पारित किया गया ।नेशनल लोक अदालत के माध्यम से प्रथम जिला न्यायाधीशगुलाब मिश्रा के न्यायालय में कुल 17 मोटर दुर्घटना संबंधी प्रकरणों काराजीनामा के आधार पर निराकरण करते हुये कुल 1,83,95,616 रूपये केअवार्ड पारित कर पक्षकारों को राहत प्रदान किया गया।एक प्रकरण में 27 वर्षीय युवक की सड़क मृत्यु हो जाने से वाहनकी बीमा कंपनी के द्वारा मृतक के परिजन से 16,50,000 रूपये में राजीनामा किया गया।

पिछोर विधायक केपी सिंह महिलाओं से माफी मांगे :जोशी

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की प्रदेश कार्यसमिति की सदस्य सरोज जोशी ने पिछोर से कांग्रेस विधायक केपी सिंह द्वारा कांग्रेस के कार्यक्रम के दौरान महिलाओं के बारे में की गई अशोभनीय टिप्पणी की निंदा करते हुए कहा कि कांग्रेस में महिलाओं का कोई सम्मान नहीं है,जिस तरह उन्होंने महिलाओं के बारे में जो अभद्र भाषा का प्रयोग किया है, इससे यह उनका चरित्रहीन चेहरा खुलकर सामने आ गया। जिस तरह उन्होंने महिलाओं को अपमानित करने का काम किया है, इसे भाजपा महिला मोर्चा कतई बर्दाश्त नहीं करेगा,उन्हें तत्काल महिलाओं से माफी मांगना चाहिए।

मालनपुर में सीमेंट की दुकान को किया गया सील

दैनिक पुष्पांजली टुडे
संवाददाता मालनपुर

मालनपुर नगर परिषद क्षेत्र में गिर्राज मार्केट में संचालित सीमेंट की दुकान पर छापा नायब तहसीलदार ने की दुकान सील मालनपुर में आज 5ः30 बजे शाम को अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी के प्रबंधक द्वारा शिकायत गोहद तहसील में की गई मालनपुर क्षेत्र में अल्ट्राटेक सीमेंट नकली बेची जा रही है शिकायत के आधार पर एस डी एम अंकुर गुप्ता के निर्देशन में एडोरी व्रत नायब तहसीलदार राकेश कुमार श्रीवास्तव ने मालनपुर गिर्राज मार्केट में बालवीर सीमेंट एजेंसी की दुकान पर छापा डाला वहां सीमेंट के सैंपल लिए गए दुकान को सील कर दिया गया अतः जानकारी नयाब तहसीलदार राकेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा दी गई और कहा गया कि अगर सीमेंट जांच में कोई गलत पाया जाता है तो सीमेंट विक्रेता के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी जांच के बाद ही दुकान को खोला जाएगा बता दे कि तहसीलदार के साथ छापामार करवाई में अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी के प्रबंधक एवं उप प्रबंधक मौजूद रहे व आर आई नरेंद्र सिंह सिकरवार, एवं मालनपुर थाना पुलिस टीम भी मौजूद रही

बेटी की याद में लगातार तेरहवीं बार किया रक्तदान

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । पंकज सोनी बरुआ नगर गणेश कॉलोनी भिंड निवासी शासकीय माध्यमिक विद्यालय मुकुट सिंह का पुरा भिंड में शासकीय शिक्षक पद पर पदस्थ हैं,उनकी 5 वर्षीय बेटी का असामयिक निधन 9 सितंबर 2009 को हो गया था।शिक्षक पंकज सोनी बताते हैं, कि एक पिता के लिए उसकी बच्ची की मृत्यु से बढ़कर और कोई दुख नहीं हो सकता। रक्त नालियों मे नही ना?ियों मे बहना चाहिये हर बेटी मे अपनी बेटी का चेहरा देखता हूँ ,अतः मैंने संकल्प किया कि मैं अपनी बच्ची की याद में प्रतिवर्ष स्वेच्छिक रक्तदान करूंगा,ताकि किसी की जिंदगी बचाई जा सके।

अम्बाह नगरपालिका की घोर लापरबाही सालो से बीच रोड पर खुले चैम्बर से हुआ हादसा

बारिश का पानी भरने से नहीं दिखा चैंबर, ई रिक्सा गिरा चालक के टूटे दॉत

केशब पंडित जी अम्बाह...

अम्बाह... बरसात में सड़कों पर मौजूद खुले चैंबर लोगों के लिए मुसीबत बन रहे हैं टेकचन्द स्कूल रोड पर पार्क के सामने बीच रोड पर सालो से खुले दो चेम्बर हादसो के शिकार बन रहै है नाली के ऊपर सफाई के लिए बने चैंबर खुले पड़े हुए हैं, जिसमें बारिश होने पर पानी भर जाता है। ऐसे में राहगीरों को ये दिखाई नहीं देते और लोग इस कारण हादसों के शिकार हो जाते कई बार नगर पालिका अधिकारियो व उपयंत्री केके दीक्षित को अबगत कराया परन्तु इस और बिल्कुल ध्यान नही देरहै है जब कि अम्बाह नगर पालिका में दो दो सीएमओ कुर्सी की लडाई लड रहै है काम के लिये जीरो है उपयंत्री सालो से पैर जमाये हुये है बिना कमीसन के अम्बाह नगर पालिका में जनहित का कोई काम सही से नही हुआ है यह मामला टेकचन्द स्कूल के सामने पार्क के पास बने चैम्बर का है हमेशा से सामने आरहा है, जहां रास्ते के बीचो-बीच चैंबर का ढक्कन खुला हुआ है, जिसमें बारिश का पानी भर गया है, जो वाहन चालकों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है।

स्कूटी सवार शख्स को नहीं दिखा चैंबर- पार्क के पास मौजूद चैंबर में पानी भर गया है। जलभराव की वजह से स्कूटी सवार शख्स को खुला चैंबर नहीं दिखा और बाइक का अगला पहिया चैंबर में चला गया। खुले चैंबर में बाइक फंसने के कारण शख्स धड़ाम से गिर पडता है स्कूटी की स्पीड कम थी, इसलिए कोई बड़ा हादसा होने से टल गया। एक ई रिक्सा बाले का पहिया धडाम से चला गया चालक के हैन्डल में मुह लगने से दॉत टूट गये इस चैम्बर के बारे में कई बार अधिकारियो को बताया है परन्तु ना सुनी करते है सीएम हैल्प लाइन में शिकायत की जिसे झूठी ओके करके बन्द करा दी गई है

लाड़ली बहना योजना का जिला स्तरीय कार्यक्रम टाउनहाल में

रीवा। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की पात्र महिलाओं को 10 सितंबर को किश्त जारी की जाएगी। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि ला?ली बहना योजना के हितग्राहियों को मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ग्वालियर में आयोजित राज्य स्तरीय महिला सम्मेलन में सिंगल क्लिक के माध्यम से राशि जारी करेंगे। रीवा में जिला स्तरीय कार्यक्रम दोपहर 2.15 बजे से नगर निगम के टाउनहाल में आयोजित किया जा रहा है। इसके साथ-साथ सभी ग्राम पंचायतों तथा नगरीय निकायों में भी ला?ली बहना योजना की राशि वितरण के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में राज्य स्तरीय कार्यक्रम तथा मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन का सजीव प्रसारण दिखाया जाएगा। इस कार्यक्रम में लाड़ली बहना सेना के सदस्यों के सेना गठन के उद्देश्य से संबंधित किये गये उल्लेखनीय कार्यों का अनुभव भी बहनों द्वारा साझा किया जायेगा।

गोबिंदगढ़ पुलिस की बड़ी कार्यवाही गांजा व नशीली कफ सिरप, के साथ शातिर अपराधी गिरफ्तार

आरोपियों के ऊपर अलग अलग धाराओं में 07 अधिक मामले हैं दर्ज,

शिवम तिवारी (ब्यूरो चीफ रीवा)

रीवा। पुलिस अधीक्षक रीवा विवेक सिंह,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर,डीएसपी मुख्यालय हिमाली पाठक के मार्गदर्शन में गोविन्दगढ़ थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल को स्टाफ सहित मिली बड़ी सफलता गांजा व नशीली कफ सिरप बेच रहा था गांजा नशीली कफ सिरप पुलिस ने जप्त कर आरोपी को किया गिरफ्तार थाना गोविंदगढ़ में अपराध क्रमांक 309/23 धारा 8/20(ड्ढ)21,22 ह्रष्ठक्क, 5/13 औषधि अधिनियम के तहत आरोपी 1.रवि शर्मा पिता ब्रजेंद्र शर्मा उम्र 27 वर्ष 2.बृजेंद्र शर्मा पिता राजकिशोर शर्मा उम्र 60 वर्ष दोनो निवासी जकीरा टोला टीकर थाना गोविंदगढ़ पर दर्ज कर विवेचना में लिया गया मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि मुखबिर से सूचना मिली थी रवि शर्मा पिता ब्रजेंद्र शर्मा उम्र 27 वर्ष 2.बृजेंद्र शर्मा पिता राजकिशोर शर्मा उम्र 60 वर्ष दोनो निवासी जकीरा टोला टीकर का आम रोड में आम के पेड़ के नीचे गांजा व कफ सिरप रखकर बेच रहा है सूचना पर थाना गोविंदगढ़ की पुलिस ने तत्काल दबिश देते हुए आरोपी के कब्जे से गांजा व नशीली कप सीरप जप्त की बाद जब्ती आरोपी को गिरफ्तार कर आरोपी को न्यायालय पेश किया गया कार्यवाही में मुख्य भूमिका थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल .उप निरीक्षक डीजे सिंह सहायक उप निरीक्षक आर.जी वर्मा सहायक उपनिरीक्षक गुलाब सिंह सहायक उपनिरीक्षक संतोषी सिंह प्रधान आरक्षक महेंद्र द्विवेदी ,प्र.आरक्षक 977 गंगा सेन आरक्षक राहुल पाण्डेय आरक्षक उपेंद्र सिंह बघेल, आरक्षक नरेंद्र तिवारी आरक्षक दिवाकर तिवारी आरक्षक ,शिवानी सिंह ,गीतांजलि झारिया

समजवादी पार्टी के नेता गुढ़ विधानसभा से चुनाव लड़ने का येलान कर चुके राकेश पाण्डे जनदर्शन के दौरान गुढ़ विधानसभा क्षेत्र भलुआ, रामनाई, महशुआ पहुंचा

जहां राकेश पाण्डे क्षेत्रीय जनों से मुलाकात की और लोगो से क्षेत्रीय समस्याओं के बारे में जानकारी ली और जल्दी ही क्षेत्रीय समस्या का निराकरण करने का आश्वासन दिया।

शिवम तिवारी(ब्यूरो चीफ रीवा)

रीवा। राकेश पांडे ने समाजवादी पार्टी के द्वारा इस बार चुनाव लड़ने का आवाहन किया है जहां उन्होंने क्षेत्रीय लोगों से सहयोग मागा गुढ़ विधानसभा से इस बार समाजवादी पार्टी के लिए लोगो मे भारी उत्साह दिख रहा है। और साथ ही गुढ़ की जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। जहा गुढ़ विधानसभा मे जनता जनार्दन द्वारा भव्य स्वागत किया गया। वही क्षेत्रीय जनों द्वारा क्षेत्रीय जन समस्याओं से अवगत कराया गया जिस दौरान क्षेत्र के बड़े बुजुर्ग और महिलाओं के साथ युवा वर्ग उपस्थित रहे।

रविवार को होगा पत्रकार महासंघ का जिला सम्मेलन

रीवा। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ जवा इकाई के तत्वावधान में एक दिवसीय जिला स्तरीय पत्रकार सम्मेलन का आयोजन 10 सितंबर को 11ः00 बजे से रामा प्लाजा अतरैला में होगा। सम्मेलन के मुख्य अतिथि भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय रहेंगे,विशिष्ट अतिथि रिटायर्ड डीएसपी बीडी पाण्डेय होंगे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष पुरुषोत्तम मिश्रा करेंगे। पत्रकार सम्मेलन में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ युवा प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष पंडित सचिन शर्मा %सूर्या%,मीडिया प्रभारी दिलीप त्रिपाठी,संभागीय अध्यक्ष डॉ. मनोज पाठक,जिला अध्यक्ष बीके मिश्रा,प्रांतीय महासचिव वीरेन्द्र मिश्रा,जिला प्रवक्ता डॉ. विवेक सिंह भदौरिया,वैदेही शरण द्विवेदी,वीपेन्द्र कुमार मिश्रा,शिवकुमार मिश्र,राहुल मिश्रा,भूपेन्द्र त्रिपाठी समेत प्रमुख पदाधिकारी सम्मेलन को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम के संयोजक ब्लॉक अध्यक्ष जवा धनात्वर प्रसाद मिश्र होंगे। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ युवा प्रकोष्ठ रीवा के जिलाध्यक्ष श्रीकृष्ण शरण शुक्ला %निखिल% ने युवा प्रकोष्ठ के समस्त पदाधिकारियों,सदस्यों एवं तराई अंचल के पत्रकार साथियों से कार्यक्रम में पहुंचकर पत्रकार सम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

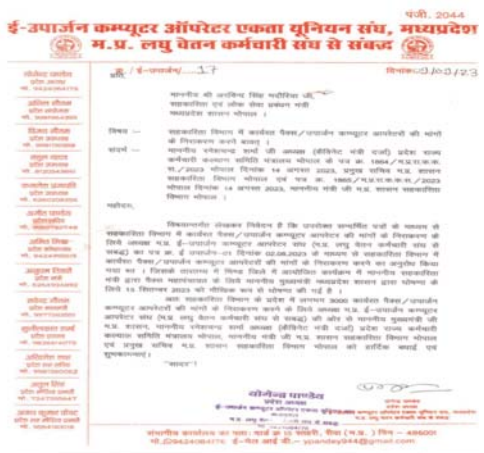

ई-उपार्जन कम्प्यूटर ऑपरेटर एकता यूनियन संघ, मध्यप्रदेश
म.प्र. लघु वेतन कर्मचारी संघ से संबद्ध

जिला भिण्ड में आयोजित कार्यक्रम में माननीय सहकारिता मंत्री मध्यप्रदेश शासन के द्वारा 15 सितम्बर 2023 को पैक्स कर्मचारियों की महापंचायत माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा करने की घोषणा की है। जिसके लिए पैक्स/उपार्जन कम्प्यूटर आपरेटर संघ मध्यप्रदेश लघु वेतन कर्मचारी से सम्बद्ध की तरफ से माननीय मुख्यमंत्री जी, श्री रमेशचन्द्र शर्मा जी अध्यक्ष (कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त) रा.क. क. स. भोपाल, माननीय सहकारिता मंत्री जी एवं प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश शासन भोपाल को अग्रिम एवं शुभकामनाएं।

लोक अदालत में 1629 प्रकरणों का हुआ निराकरण, बारह करोड़ 89 लाख 36 हजार 251 रूपये से अधिक के अवार्ड पारित

विवेक तिवारी (संभागीय ब्यूरो)

रीवा। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रीवा श्री सुबोध कुमार जैन के मार्गदर्शन में लोक अदालत प्रभारी विशेष न्यायाधीश श्री सुरेन्द्र कुमार जिला न्यायालय परिसर में दीप प्रज्जवलन कर राष्टीय लोक अदालत का शुभांरभ किया गया। नेशनल लोक अदालत में आपसी समझौते के तहत प्रकरण निराकरण हेतु जिला एवं तहसील न्यायालयों में कुल 46 खंडपीठों का गठन किया गया जिसमें प्रीलिटिगेशन के. 809 प्रकरण में निराकरण किया गया जिसमें राशि का अवार्ड राशि 97 लाख 12 हजार 604 रूपये एवं 820 लंबित प्रकरण के निराकरण में अवार्ड राशि 11 करो? 92 लाख 23 हजार 647 रूपये राशि के अवार्ड का निराकरण लोक अदालत शिविर के माध्यम से किया गया। इस तरह कुल 1629 प्रकरणों का निराकरण किया गया एवं 12 करो? 89 लाख 36 हजार 251 रूपये के अवार्ड पारित किए गए। जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री अभय कुमार मिश्रा ने बताया कि लोक अदालत में दाण्डिक 235 प्रकरणों में 29 लाख रूपये, चेक बाउंस के 107 प्रकरणों में एक करो? 90 लाख 48 हजार 513 रूपये, मोटर क्लेम के 190 प्रकरणों में 8 करो? 24 लाख एक हजार 923 रूपये, सिविल के 58 प्रकरणों में 74 लाख 58 हजार 499 रूपये, विद्युत के लंबित 152 प्रकरणों में 17 लाख 58 हजार 329 रूपये, श्रम के 7 प्रकरणों में 64 लाख 94 हजार 120 रूपये, विद्युत के प्रीलिटिगेशन के 174 प्रकरणों में 18 लाख 8 हजार 187 रूपये, बैंक प्रीलिटिगेशन के 205 प्रकरणों में 68 लाख 30 हजार 433 रूपये, जलकर के प्रीलिटिगेशन 418 प्रकरणों में 9 लाख 39 हजार 136 रूपये तथा अन्य प्रीलिटिगेशन के 12 प्रकरणों में एक लाख 34 हजार 848 रूपये एवं अन्य लंबित 54 प्रकरणों में 17 लाख 72 हजार 263 रूपये के अवार्ड पारित किये गये। लोक अदालत में 17 पारिवारिक विवाद प्रकरणों का निराकरण भी हुआ। इस अवसर पर श्री शिकान्त प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय, द्वितीय जिला न्यायाधीश श्री विक्रम सिंह, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री अहमद रजा, तृतीय जिला न्यायाधीश श्री रमेश रंजन चौबे, नवम जिला न्यायाधीश श्री देवेन्द्र सिंह पाल, तेरहवें जिला न्यायाधीश, श्री केशव सिंह, सप्तम जिला न्यायाधीश, श्री आनंद गौतम, अष्टम जिला न्यायाधीश, श्री प्रवीण पटेल, ग्यारहवें जिला न्यायाधीश, श्री दिलीप सिंह, पंचम जिला न्यायाधीश, श्री विवेकानन्द त्रिवेदी, षष्टम जिला न्यायाधीश श्री आशीष ताम्रकार, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी, श्री रुपसिंह कनेल, वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्रीमती प्रीतिशिखा अग्निहोत्री, जिला रजिस्ट्रार श्री देवदत्त, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्री अक्षत तयाल, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्रीमती पद्मिनी सिंह, कनिष्ठ खंड न्यायाधीश श्री ललित कुमार मईडा, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश सुश्री अंजली अग्रवाल, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्री अमित सिंह धुर्वे, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश सुश्री अदिति अग्रवाल, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश सुश्री चेंतना झारिया, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्री संजीव रहंगडाले, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्रीमती मीनल गजवीर, कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्री अजय कुमार नागेश, न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

देर से जागे

हाल के दिनों में हिमाचल और उत्तराखंड में भारी बारिश, भूस्खलन, बादल फटने और बाढ़ की विभीषिका से जो जन–धन की हानि हुई, उसे केंद्र व राज्यों को एक सबक के रूप में लेना चाहिए। जाहिर है कि इन हिमालयी राज्यों में हिल स्टेशनों की वहन क्षमता को नजरअंदाज करके बिना मास्टर प्लान के जो निर्माण हुआ, वही इस आपदा की वजह बना। सत्ताधीशों व स्थानीय प्रशासन ने इस अंधाधुंध निर्माण की अनदेखी की है, जिससे इन हिल स्टेशनों के अस्तित्व पर ही संकट के बादल मंडराने लगे। इस तबाही के बाद ही देश की शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार से कहा था कि वह हिमालयी राज्यों में वहन क्षमता के संबंध में निर्देश पारित करने के लिये आगे का रास्ता सुझाए। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने हाल के दिनों में अतिवृष्टि से शिमला और जोशीमठ में भूस्खलन की घटनाओं के मद्देनजर हिमालयी क्षेत्रों में वहन क्षमता और मास्टर प्लान का आकलन करने के लिये एक विशेषज्ञ पैनल गठित करने का संकेत दिया था। इस विषय की गंभीरता को देखते हुए मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली पीठ ने कहा था कि उसका विचार तीन विशेषज्ञ संस्थानों को इस मकसद के लिये एक–एक विशेषज्ञ को नामित करने के लिये कहने का है। कोर्ट के इसी मौखिक निर्देश के जवाब में केंद्र सरकार ने हालिया हलफनामा दाखिल किया है। इस हलफनामे के मुताबिक, केंद्र चाहता है कि हिमालय क्षेत्र की वहन क्षमता के आकलन के लिये समयबद्ध ढंग से कार्ययोजना को मूर्त रूप दिया जाये। दरअसल, केंद्र सरकार से सुप्रीम कोर्ट ने सभी 13 हिमालयी राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों को इस संबंध में निर्देश देने का आग्रह किया। केंद्र सरकार ने अपने हलफनामे में कहा कि इन राज्यों को प्रतिष्ठित जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान द्वारा तैयार दिशा–निर्देशों के अनुसार वहन क्षमता के मूल्यांकन के लिये उठाये गये कदमों की रिपोर्ट और एक्शन प्लान समयबद्ध तरीके से लागू करने का निर्देश दिया जाये।दरअसल, यहां वहन क्षमता से अभिप्राय है इन हिमालयी शहरों की क्षमता के अनुसार जनसंख्या के आकार का निर्धारण करना, जो कि क्षेत्र के पारिस्थितिकीय तंत्र को नुकसान पहुंचाये बिना अस्तित्व में रह सकती है। दरअसल, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा सुप्रीम कोर्ट में दायर हलफनामे में इस बात का उल्लेख है कि हरेक हिल स्टेशन में स्थानीय अधिकारियों की सहायता से उन तमाम तथ्यात्मक पहलुओं की पहचान की जाए और उससे जुड़े सभी आंकड़े जुटाए जाएं। मंत्रालय का कहना था कि इन हिमालयी राज्यों द्वारा तैयार की गयी वहन क्षमता अध्ययन की रिपोर्ट का मूल्यांकन जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता वाली एक तकनीकी समिति द्वारा किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि संस्थान विगत में मनाली, मैक्लोडगंज व मसूरी के लिये किये गए एक विशिष्ट वहन क्षमता अध्ययन में भागीदार रहा है। इस बाबत मंत्रालय का सुझाव रहा है कि इस अभियान में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, भारतीय रिमोट सेंसिंग संस्थान, राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान, वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी,भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशकों या विशेषज्ञों को समिति में शामिल किया जा सकता है। निस्संदेह, इस अध्ययन को प्रमाणिक व व्यावहारिक बनाने के लिये राज्यों के आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग के प्रतिनिधि, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व केंद्रीय भूजल बोर्ड के नामित व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। तंत्र की काहिली का आलम देखिये कि जीबी पंत संस्थान ने इस बाबत दिशा–निर्देश तैयार करके तीस जनवरी 2020 को सभी तेरह हिमालयी राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों को भेज दिये थे, लेकिन इस बाबत कोई कार्रवाई नहीं हुई। विडंबना ही है कि 19 मई, 2023 में मानसून से पहले भी इन राज्यों को स्मरण पत्र भेजा गया, लेकिन फिर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि इन विशेषज्ञ संस्थानों की सिफारिशों को सहज–सरल रूप दिया जाए ताकि उन पर व्यवहार में सुगमता से अमल किया जा सके। लोगों की आर्थिक क्षमताओं व सीमाओं को लेकर मानवीय व संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया जा सके।

राजनैतिक दलों की सम्पति

आदित्य नारायण

भाजपा की सर्वाधिक रकम होने पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि वह केन्द्र की सत्तारूढ़ पार्टी है, अतः धन्ना सेठ व पूंजीपति उसके कृपापात्र उसी तरह बनना चाहेंगे जिस तरह कांग्रेस के राज में चाहते थे।

भारतीय राजनीति में शुचिता और पारदर्शिता के पुरोधा लोकनायक जयप्रकाश नारायण मानते थे कि देश में भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी वजह महंगे होते चुनाव हैं। अतः वह चुनाव प्रणाली में आमूल–चूल सुधार के प्रमुख अलम्बरदार थे। इसी वजह से उन्होंने 1974 में शुरू हुए अपने आन्दोलन की मुख्य मांग चुनाव सुधार रखी थी। मगर जेपी सत्ता की राजनीति से कोसों दूर थे जिसकी वजह से उन्हीं के चेले–चपेटों ने उनकी बात कभी नहीं सुनी और यहां तक हुआ कि 1977 में जो जनता पार्टी की मोरारजी देसाई सरकार कांग्रेस की इन्दिरा सरकार को हरा कर गद्दीनशीं हुई थी उसी ने जेपी द्वारा चुनाव सुधारों पर गठित तारकुंडे समिति की रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में फेंक कर नया चुनाव सुधार आयोग गठित कर दिया। यह मैं इसलिए याद दिला रहा हूं क्योंकि राजनीति में पारदर्शिता का अभियान चलाने वाली गैर सरकारी संस्था एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) ने अपनी हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट में देश की प्रमुख राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियों की कुल जमा नकद रोकड़ा सम्पत्ति का ब्यौरा प्रकाशित किया है। ये आंकड़े चुनाव आयोग के रिकार्ड में भी दर्ज हैं। भारत की आठ प्रमुख पार्टियों के पास कुल जमा रोकड़ा 8829 करोड़ रुपए है। इसमें सबसे ज्यादा हिस्सा सत्तारूढ़ भाजपा का 6046 करोड़ रुपए है। इसके बहुत नीचे जाकर दूसरे नम्बर पर कांग्रेस के पास 805 करोड़ रुपए हैं। तीसरे नम्बर पर केरल में सत्तारूढ़ मार्क्सवादी पार्टी 736 करोड़ रुपए के साथ है और चौथे नम्बर पर बहन मायावती की बहुजन समाज पार्टी 691 करोड़ रुपए के आंकड़े पर है। पांचवें नम्बर पर पं. बंगाल की सुश्री ममता बनर्जी की सत्तारूढ़ पार्टी तृणमूल कांग्रेस 458 करोड़ रुपए के साथ है। भाजपा की सर्वाधिक रकम होने पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि वह केन्द्र की सत्तारूढ़ पार्टी है, अतः धन्ना सेठ व पूंजीपति उसके कृपापात्र उसी तरह बनना चाहेंगे जिस तरह कांग्रेस के राज में चाहते थे। राज्यों में सत्तारूढ़ पार्टियों को भी अच्छा चन्दा मिलने की वजह समझी जा सकती है मगर जो सबसे चिन्ताजनक संकेत हैं वे सांसदों के करोड़पति से अरब व खरबपति बनने के हैं। राज्यसभा में पक्ष–विपक्ष के बीसियों सांसद हैं जिनकी सम्पत्ति एक हजार करोड़ रुपए से ऊपर है। इसी प्रकार लोकसभा का भी आलम है। यदि भारत की गरीब जनता के चुने हुए प्रतिनिधि अरबपति होंगे तो निश्चित रूप से भारत के मालिक वे ही होंगे? मूल प्रश्न यही है जिसकी तरफ जेपी ध्यान दिलाया करते थे और चुनावों को सस्ता किये जाने की बात कहा करते थे। जिस देश के 50 प्रतिशत लोग प्रति महीने अधिकतम 1286 रुपए प्रतिमाह खर्च करके अपना गुजारा चलाते हों वहां उनके प्रतिनिधि अरबपति किस प्रकार हो सकते हैं? यह बहुत गंभीर प्रश्न है जिससे इस देश की सभी राजनैतिक पार्टियां आंखें चुराती हैं और लोगों को भरमाने के नये–नये तरीके खोजती रहती हैं। आज नहीं तो कल हमें इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना ही होगा वरना हमारा लोकतन्त्र पूंजीपतियों के पास गिरवी रखा मिलेगा। यह बात बहुत कड़वी है मगर सच्ची है। सवाल यह नहीं है कि किस पार्टी का शासन है मगर असली सवाल यह है कि राजनैतिक पार्टियों की बागडोर किन लोगों के हाथ में है? यहां प्रश्न पूंजीपतियों के विरोध या समर्थन का नहीं बल्कि उस चुनाव प्रणाली की शुचिता और पारदर्शिता का है जिसकी मार्फत इस देश की जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनकर उनके हाथ सत्ता की बागडोर सौंपती है। जब चुनावों में कोई आम सुविज्ञ नागरिक खड़ा होने की हिम्मत ही नहीं कर पायेगा और धनपति व धन्ना सेठ अपनी धन शक्ति के बूते पर जनमत को प्रभावित करने से सक्षम होने लगेंगे तो लोकतन्त्र को 'धन–तन्त्र' में बदलने से कौन रोकेगा? बेशक लोकतन्त्र में धन की भूमिका है मगर उसका बंटवारा आम जनता के बीच न्यायोचित रूप से करने के लिए शासन वचनबद्ध होता है। जब किसी देश की सकल विकास वृद्धि दर बढ़ती है तो आम जनता को उसका लाभ इस प्रकार पहुंचता है कि रोजगार की प्रचुरता के साथ राष्ट्रीय सम्पत्ति में भागीदारी बढ़ती जाती है। यह बाजारवाद का कहना है मगर गांधीवाद कहता है कि सरकारें स्वयं ऐसी व्यवस्था करें जिससे अमीर व गरीब के बीच की खाई पटे और यह कार्य गरीबों को सीधे सत्ता में भागीदारी देने से किया जाना चाहिए। अर्थात फैसले किये जाने के स्तर पर उनकी स्थायी भागीदारी होनी चाहिए। इसका सीधा सम्बन्ध सस्ते चुनावों से जाकर जुड़ता है। गांधीवाद इसी की वकालत करता है और कहता है कि सत्ता के शीर्ष पर मजदूर या किसान अथवा दलित की औलादों का बैठना तभी कारगर हो सकता है जबकि ये सब लोग पूरी तरह से आत्मविश्वास से भरे हों। यह आत्मविश्वास केवल सस्ती चुनाव प्रणाली ही दे सकती है। आज के राजनीतिज्ञों को तो शायद मालूम भी नहीं होगा अथवा वे मालूम भी नहीं करना चाहते कि जब भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री व गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की मृत्यु हुई तो उनकी कुल जमा सम्पत्ति मात्र 259 रुपए थी। हमारे पुराने सभी नेताओं ने अपनी पैतृक सम्पत्तियां देश व समाज के नाम कर दी थीं। उनके नामों की फेहरिस्त से यह पूरा सम्पादकीय भर जायेगा। मगर यह काम राजनैतिक दलों का है कि वे राजनीतिज्ञों को सदाचारी व राजनीति को स्वच्छ बनाये। यूरोप के स्कैंडनेवियाई देशों जैसे नार्वे, स्वीडन आदि में यह व्यवस्था है कि जब कोई व्यक्ति राजनीति में आता है तो वह अपनी सारी निजी सम्पत्ति से खुद को बेदखल करके ही आता है और अपने परिवार की सम्पत्ति का ब्यौरा देकर आता है। क्या हम सपने में भी सोच सकते हैं ? हम तो बहुत गरीब देश हैं!

जी–20 का भारत और यथार्थ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की छवि चमकाने का नया मौका दिन–ब–दिन करीब आता जा रहा है। साथ ही यह भी पता चल रहा है कि इसके लिये किस बड़े पैमाने पर पैसा खर्च किया जा रहा है। 9 और 10 सितम्बर को दिल्ली में आयोजित जी–20 के दौरान इवेंटबाजी में सिद्धहस्त मोदी भारत की एक ऐसी चमकदार तस्वीर पेश करने जा रहे हैं जिसके पीछे देश की बदहाली का अंधेरा छिप जाये। वैश्विक नेताओं के सामने वे खुद को एक उदार, लोकतांत्रिक तथा समतावादी नेता साबित करने की कोशिश करने जा रहे हैं ताकि पिछले नौ वर्षों के दौरान उनके सारे लोकतंत्र विरोधी कृत्यों पर पर्दा पड़ जाये। वे खुद और साथ ही कमजोर होती हुई उनकी भारतीय जनता पार्टी इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन का भरपूर लाभ आंतरिक राजनीति में उठाने पर आमादा दिखलाई पड़ रही है। इसके लिये एक तरफ आयोजन स्थलों को बेतहाशा सजाया–संवारा जा रहा है, तो दूसरी तरफ मोदी इस आशय के बयान दे रहे हैं हैं मानों उन्होंने मुल्क को जन्नत बना दिया हो। पहले बात करें साज–सज्जा की। दिल्ली के हृदय स्थल पर बने प्रगति मैदान में भारत मंडपम के नाम से भव्य आयोजन स्थल बनकर लगभग तैयार हो चुका है। 26 देशों के राष्ट्राध्यक्ष यहां भारत के आध्यात्मिक–सांस्कृतिक गौरव और परम्परा का प्रस्तुतिकरण देखेंगे। बाहरी मुल्कों से आने वाले जी–20 के संख्या में बहुत कम लेकिन बेहद प्रभावशाली राष्ट्राध्यक्षों को दिखलाने और आत्मसंतुष्टि के लिये मंडप के अलग–अलग हिस्सों में भारत का केन्द्रीय भाव श्वसुधैव कुटुम्बकम्श अभिव्यक्त हो रहा है। सांस्कृतिक वीथिका में 29 भाषाओं में बतलाया गया है कि 'संसार एक परिवार है।' हिन्दू धर्म से जुड़े कई प्रतीक चिन्ह भी यहां हैं– मोर पंख है तो शंख भी। यहां पंचतत्व है, सूर्य शक्ति है, योग है और वेद की पाण्डुलिपि भी। यानी वह सब कुछ जो प्राचीन भारत की देन है। हालांकि इस सम्पूर्ण वास्तु के दौरान यह भी ध्यान रखा गया है कि वर्तमान सत्ता को इन तमाम उपलब्धियों एवं अर्जित विकास का श्रेय देना है। श्जीरो से इसरोश इसी प्रयास की एक कड़ी है। तीन दर्जन सभा कक्षों वाली चार मंजिला इमारत में 14 हजार लोगों के बैठने तथा 5500 कारों की पार्किंग के लिये जगह है। शंखनुमा झूमर के साथ इतना आलीशान सभा कक्ष कि कोई देश की गरीबी का अंदाजा भी न लगा सके। इसके साथ ही बात करनी जरूरी है उस साक्षात्कार की जो प्रधानमंत्री ने जी–20 सम्मेलन के अवसर पर एक समाचार एजेंसी को दिया है। उन्होंने इसमें बताया है कि पहले भारत को एक अरब भूखे लोगों का देश माना जाता था परन्तु अब वह एक अरब महत्वाकांक्षी दिमाग तथा 2 अरब कुशल हाथों में रोजगार का देश बन गया है। भारत के जल्दी ही दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाने का दावा दोहराते हुए मोदी साहब बतलाते हैं कि 2047 तक, यानी आजादी के सौ साल पूरे होने पर देश एक विकसित राष्ट्र बन जायेगा। विकास के लिये 4–डी का फार्मूला देते हुए मोदी यह भी बताते हैं कि अब दुनिया का भारत को देखने का नजरिया बदल गया है। डेमोक्रेसी, डेमोग्राफी और डायवर्सिटी के साथ डेवलपमेंट शब्द को जोड़ते हुए प्रधानमंत्री ने देशवासियों को आश्वस्त किया है कि भारत का 1000 वर्षों के विकास का रास्ता प्रशस्त हो चुका है। एक अच्छे समाज सुधारक की तरह उन्होंने भ्रष्टाचार, जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता से दूर रहने की सलाह दी है। इसके साथ ही उन्होंने देशी व अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र पर अपनी गहरी पकड़ व अनुभव के बल पर छोटे विकासशील देशों को सलाह भी दी है कि वे कर्जों के जाल में न फंसें। इसके अलावा भी उन्होंने अनेक बातें कही हैं जो भारत के नागरिक आधारित मॉडल, फेक न्यूज के खतरे, कोरोना काल में भारत द्वारा 150 देशों को टीके व दवाइयां देने और सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय से सम्बन्धित है। अगर मोदी के उपरोक्त साक्षात्कार के अलग–अलग हिस्सों पर विचार करें तो साफ है कि भारत में कम से कम ऐसा कुछ भी होता हुआ नहीं दिख रहा है। देश में रोजगार की स्थिति सर्वज्ञात है। देश की विकास दर निम्न स्तर पर है। देश में लोकतंत्र के जितने खराब दिन अभी चल रहे हैं, वैसे नागरिकों ने कभी भी नहीं देखे। मानवाधिकार कानून ताक पर रख दिये गये हैं, सारी संवैधानिक संस्थाएं इतनी कमजोर कर दी गई हैं कि वे एक तरह से सरकार की हां में हां मिला रही हैं। सत्ता से सवाल पूछने वाले जेलों में डाल दिये गये हैं। लोकतंत्र की जननी होने का दावा करने वाले मोदी का 9 साल का कार्यकाल नागरिकों के बुनियादी हकों और समावेशी संस्कृति को मटियामेट कर चुका है। जातिवाद और साम्प्रदायिकता का आलम यह है कि दलित महिलाओं से बलात्कार होते हैं, आदिवासियों पर पेशाब की जाती है तथा ट्रेन में बाकायदा शिनाख्त करते हुए मुस्लिमों को गोलियों से भुना है। संविधान बदलने की बात होती है और विपक्ष मुक्त भारत बनाया जा रहा है।आधी से ज्यादा दिल्ली को ठहराकर या बन्द कराकर मोदी स्वयं को बाहरी लोगों के सामने देश का सबसे शक्तिशाली और देशवासियों के समक्ष एक लोकप्रिय वैश्विक नेता साबित करना चाहते हैं। आंतरिक राजनीति में अपनी कमजोर होती स्थिति को सुधारने के लिये मोदी बड़े पैमाने पर खर्च कर रहे हैं वरना नयी दिल्ली और उसके आसपास ऐसे सैकड़ों स्थल हैं जहां ये आयोजन सादगीपूर्ण ढंग से हो सकते हैं। दरअसल यह मोदी द्वारा वैश्विक नेताओं के समक्ष प्रस्तुतिकरण के लिये तैयार किया गया भारत है। असली हिन्दुस्तान बिलकुल अलग है– बदहाल, विपन्न, विभाजित और पिछड़ता हुआ।

डर के साये में जिनपिंग

दिल्ली में जी–20 शिखर सम्मेलन में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के नहीं आने की पुष्टि तो पहले ही हो चुकी थी। पुतिन तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से फोन पर बातचीत के दौरान अपने न आने पर खेद जता चुके हैं। वे अपनी जगह रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लाबरो को भेज रहे हैं। चीन ने भी आधिकारिक बयान में साफ कर दिया है कि राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत नहीं जा रहे बल्कि उनकी जगह चीन के प्रधानमंत्री ली क्यांग शिखर सम्मेलन में चीन का प्रतिनिधित्व करेंगे। ब्लादिमीर पुतिन के न आने की वजह यूक्रेन–रूस युद्ध और घरेलू परिस्थितियां हैं। चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग का स्वयं न आना भारत के लिए कोई आश्चर्जनक बात नहीं है। 2013 में राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार सम्भालने के बाद जिनपिंग ने 2021 में रोम जी–20 के अलावा हर जी–20 सम्मेलन में व्यक्तिगत और आभासी सम्मेलन में भाग लिया है, जब चीन कोरोना महामारी की चपेट में था। पिछले वर्ष जिनपिंग ने बाली जी–20 शिखर सम्मेलन में भाग लिया था। कुछ दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दक्षिण अफ्रीका के जोहानिसबर्ग में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर जिनपिंग से बात भी हुई थी। सवाल यह है कि जिनपिंग भारत क्यों नहीं आ रहे। 1980 के दशक में संबंधों के सामान्य होने के बाद से भारत और चीन के रिश्ते निम्न स्तर पर हैं। 28 अगस्त को चीन ने अरुणाचल प्रदेश, आक्साईचिन और दक्षिणी चीन सागर को चीनी क्षेत्र में दिखाया गया,जिसका भारत ही नहीं बल्कि मलेशिया और फिलीपींस ने भी कड़ा विरोध किया था। यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय विवादों के बीच एक नया मानचित्र जारी कर घविवादों को अधिक जटिल बना दिया है। 2019 में भारत

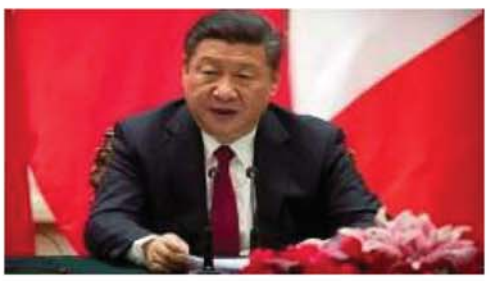

ने जब जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाया और जम्मू–कश्मीर तथा लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश बना डाला तब भी चीन ने एक नक्शा जारी कर विवाद खड़ा किया था। चीन ने भारत के साथ संबंधों में विश्वास पैदा करने की कोई कोशिश नहीं की। चीन ने कभी भी अपने पड़ोसियों के प्रति संवेदनशीलता नहीं दिखाई। इस तरह मेल–मिलाप की सम्भावनाएं भी क्षीण होती गई। इस समय चीन की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो रही है और वहां बेरोजगारी बढ़ गई है और एक तरह से मंदी छा चुकी है और आर्थिक गतिघ्विधियां ठप्प हो कर रह गई हैं।भारत में जी–20 शिखर सम्मेलन को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के बीच एक बैठक के संभावित अवसर के रूप में भी देखा गया है। बाइडेन ने इस सम्मेलन में अपनी उपस्थिति की पुष्टि की है। अमेरिका इन दिनों चीन के साथ बिगड़ते रिश्तों को स्थिर करने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, चीन ने शी जिनपिंग की योजनाओं को लेकर कोई टिप्पणी नहीं की है लेकिन विश्लेषकों ने अनुमान लगाया कि बीजिंग को लगता है कि भारत–चीन तनाव के कारण शी जिनपिंग को जी–20 में विशेष रूप से गर्मजोशी से स्वागत मिलने की संभावना नहीं है। कई यूरोपीय देश यूक्रेन पर आक्रमण के बाद रूस को चीन के समर्थन को लेकर सावधान हैं। वहीं दूसरी ओर अमेरिका जापान और दक्षिण कोरिया के साथ चीन विरोधी खेमा बना रहा है। ऐसे में उन्होंने जी–20 से दूरी बनाने का फैसला खुद की इज्जत बचाने के लिए किया होगा।जिनपिंग की जी–20 सम्मेलन से दूरी इस बात की ओर संकेत करती है कि कोरोना वायरस से लेकर साऊथ चाईना सी और ताइवान समेत कई मसलों पर चीन घिरा हुआ है। चीन अच्छी तरह से जानता है कि दुनिया उसके देश से खुश नहीं है। जिनपिंग कहीं न कहीं कई देशों से होने वाली घेराबंदी से डरे हुए हैं। चीन पूरी दुनिया के सामने बेनकाब हो चुका है। चीन कीविस्तारवादी नीति के अलावा चीन का घमंड जिनपिंग के फैसले के बताने के लिए काफी है। चीन को इस बात का घमंड है कि वह दुनिया में सबसे शक्तिशाली है। चीन को इस बात से भी परेशानी थी कि जी–20 की बैठकें जम्मू–कश्मीर और अरुणाचल में क्यों की जा रही हैं। गलवान झड़प के बाद सीमा पर गतिरोध के बीच भारत ने जिस तरह से सीमा पर चीन का कड़ा प्रतिरोध किघ्या उसकी चीन को भी उम्मीद नहीं थी। जी–20 सम्मेलन के जरिये भारत दुनिया में एक नई शक्ति के तौर पर उभर रहा है। दुनिया के देश भारत का दमखम देख रहे हैं। चीन को भी इस बात का अहसास है कि अब भारत 1962 वाला भारत नहीं है, बल्कि 2023 वाला भारत है। चीन चाह कर भी भारत कोघ्एक बहुपक्षीय मंच का नेतृत्व करने से नहीं रोक सकता। यही कारण है कि जिनपिंग ने नई दिल्ली की यात्रा टाल दी है।

विकास रथों के माध्यम से शासन की योजनाओं का किया जा रहा प्रचार-प्रसार

रीवा। शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं तथा कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार के लिए जिले में चार विकास रथ भ्रमण कर रहे हैं। विकास रथ 5 अक्टूबर तक जिले के नगरीय निकायों के विभिन्न वार्डों तथा ग्राम पंचायतों का भ्रमण करेंगे। इन रथों में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से शासन की विभिन्न योजनाओं की एक घण्टे की फिल्म दिखाई जा रही है। इसके साथ-साथ रथ से प्रसिद्ध कलाकार रघुवीर यादव द्वारा गाए गए मध्यप्रदेश गान एवं अन्य गीत प्रसारित किए जा रहे हैं। रथों के माध्यम से मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना प्रदेश में कृषि और सिंचाई के विकास, केन्द्र सरकार की योजनाओं के

प्रभावी क्रियान्वयन, महिला स्वसहायता समूहों की सफलता, प्रदेश में महिला सशक्तिकरण तथा मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना पर आधारित वीडियो फिल्में दिखाई जा रही हैं। रथों के भ्रमण के लिए जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को नोडल अधिकारी बनाया गया है। विकास रथ 10 सितम्बर को विधानसभा क्षेत्र मऊगंज के ग्राम हर्दी नम्बर एक, शाहपुर एवं गौरी का भ्रमण करेंगे। विकास रथ विधानसभा गु? में 10 सितम्बर को ग्राम भीटी, हरदुआ, बरहदी एवं बु?वा का भ्रमण करेंगे। विकास रथ विधानसभा क्षेत्र रीवा में 10 सितम्बर को 21 से 25 तक के क्षेत्र में भ्रमण करेंगे। विकास रथ विधानसभा क्षेत्र सिरमौर में 10 सितम्बर को ग्राम खपटिहा, डगडैया, नगमा एवं सितलहा का भ्रमण करेंगे।

थाना कोटर जिला सतना दिनांक 09.09.23 कोटर पुलिस की कार्यवाही नाबालिक के साथ छेडखानी कर मारपीट करने वाले आरोपी को किया गिरफ्तार

श्री आशुतोष गुप्ता पुलिस अधीक्षक महोदय सतना के कुशल निर्देशन एवं श्री विक्रम सिंह कुशवाह अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय सतना, श्री विजय प्रताप सिंह उप पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सतना के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी कोटर उनि रवीन्द्र द्विवेदी के नेतृत्व मे की गयी कार्यवाही

पुष्पांजली टुडे
राजेश कुमार तिवारी

घटना विवरण-फरियादिया शांता सिंह (परिवर्तित नाम) थाना कोटर की थाना उपस्थित आकर के जुवानी रिपोर्ट किया की कोटर का एक लड़का गलत नियत से मेरा पीछा करता है तथा अश्लील बात करता था यह बात मै अपने घर वालो को बताई थी दिनाक 04/09/23 को मैं स्कूल छुट्टी के बाद आनंद शुक्ला बस स्टैन्ड के पास मिला तथा छेड़खानी करने लगा तब मैं अपने भाई को फोन कर के बताई तो मेरा भाई आया तथा आनंद शुक्ला को कहा कि क्यों मेरी बहन को परेशान करते हो इसी बात पर से आनंद शुक्ला मुझे व मेरे भाई को माँ बहन की गन्दी गन्दी गालिया देकर मारपीट किया फिर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गया कि रिपोर्ट पर आरोपी के विरुद्ध थाना कोटर में अप.क्र.290/23 धारा 354-डी 294,323,506 ताहि 7/8 पाक्सो एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया जाकर आरोपी की पता तलाश प्रारम्भ की गयी थाना कोटर पुलिस द्वारा आज दि.09.09.23 को आरोपी को गिरफ्तार किया गया एवं माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया जहा से माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी को केंद्रीय जेल सतना भेज **दिया गया है ।**

गिरफ्तार आरोपी-आनंद शुक्ला पिता रामबाबू शुक्ला उम्र 19 वर्ष नि. कोटर

सराहनीय भूमिका-थाना प्रभारी उनि रविन्द्र द्विवेदी, काउनि सरला शर्मा बी एस तोमर , सउनि बीरेन्द्र चौबे प्र.आर. देवेन्द्र सेन, धीरज यादव, विपिन द्विवेदी, देवदत्त द्विवेदी, मंजू तिवारी

कोठी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्य मेले का हुआ भव्य शुभारंभ

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

जिलाचिकित्सा अधिकारी एलके तिवारी भी पहुचे व मरीजो का हालचाल जानाआयुष्मान स्वस्थ मेले का हुआ भव्य शुभारंभ भारी संख्या में कोठी सहित ग्रामीण क्षेत्रों से हजारों की संख्या में लोग इस स्वस्थ मेले का लाभ

लेने पहुच रहे इस कार्यक्रम की शुरुआत रोगी कल्याण समिति की अध्यक्ष विधायक कल्पना वर्मा सहित नगर परिषद अध्यक्ष शुखवंती बुनकर व भाजपा मंडल अध्यक्ष की उपस्थिति में ईश्वर की पूजा अर्चना कर प्रारंभ किया गया इस कार्यक्रम में हर मर्ज के डॉक्टरों का अलग अलग चेम्बर व आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए भी लोगो ने भारी उत्साह दिखा सैक?ो की संख्या में स्वस्थ विभाग के कर्मचारियों व डॉक्टरों की उपास्थि में लोगो का इलाज व परामर्श दिया गया साथ ही निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया ।

भाटसन प्राइमरी स्कूल में ओके स्टूडेंट प्रोजेक्ट

ब्यूरो रिपोर्ट
दैनिक पुष्पांजली टुडे

गुजरात। पाटन जिले के सरस्वती तालुका में भाटसन पगार केंद्र स्कूल में एन फॉर न्यूज और भाषा प्रयोगशाला की शानदार सफलता के बाद, प्रिंसिपल के मार्गदर्शन में भाटसन के भाषा शिक्षकों द्वारा एक नई परियोजना ओके स्टूडेंट शुरू की गई है। ओआरएफ के संबंध में जिसमें बच्चों का भाषाई अध्ययन किया जाता है। बच्चों के लिए न्यूज स्टूडियो और लैंग्वेज लेबोरेटरी के माध्यम से ओके स्टूडेंट प्रोजेक्ट शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य बच्चों में अच्छी तरीके से पढ़ने की क्षमता का विकास करना है और बच्चे उचित प्रवाह व उचित गति के साथ पढ़ सकें। शिक्षक श्री एन.के.श्रीमालीने बताया कि बच्चे घर जाकर भी

अपने मौखिक पठन को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं और खुदकी रिकॉर्ड की गइ पढाइ की ऑडिओ क्लिप करके व्हाट्सएप के माध्यम से शिक्षक के मोबाइल फोन पर भेजते हैं, ताकि बच्चों को निरंतर उपचारात्मक शिक्षा मिलती रहे। भाषा प्रयोगशाला के उपयोग के माध्यम से बच्चे टेक्नॉलौजीसे सुसज्जित होते हैं। पढ़ने में दक्षता हासिल करने वाले बच्चों को ओके स्टूडेंट बेस से सम्मानित किया जाता है।

सांइस टैलेंट सर्च प्रतिभा परीक्षा संयुक्त रूप से की जा रही आयोजित

परीक्षा के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 15 सितम्बर

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्था, एनसीआरटी, एनसीएसएम, मेपकास्ट और विज्ञान भारती संयुक्त रूप से सांइस टैलेंट सर्च प्रतिभा परीक्षा आयोजित करेगी ।परीक्षा के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2023 है। कक्षा 6 से 11 तक के विद्यार्थी परीक्षा में भाग ले सकते हैं। परीक्षा में कुल 100 प्रश्न गौरवशाली भारतीय वैज्ञानिकों का विज्ञान के प्रति योगदान, बीरबल साहनी का जीवन परिचय ,भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और विज्ञान से 40 प्रतिशत, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम से 50 प्रतिशत एवं तार्किक शक्ति से 10 प्रतिशत प्रश्न पूछे जायेंगे।परीक्षा 29 और 30 नवंबर 2023 को ऑनलाइन आयोजित होगी। परीक्षा का प्रथम चरण विद्यालय स्तर पर, द्वितीय चरण राज्य स्तर और तृतीय चरण में राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा होगी।राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक कक्षा से प्रथम, द्वितीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को भास्कर एवॉर्ड और दो हजार रुपये प्रति माह एक वर्ष तक छात्रवृति मिलेगी। साथ ही 90 विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित प्रयोगशाला में इन्टर्नशिप का अवसर मिलेगा। वेबसाइट (ड ब्ल ू ड ब्ल ू ड ब्ल ू . वीवीएम.ओआरजी.इन) पर पंजीयन किया जा सकता है।

स्मार्ट सिटी ई रिक्शा संघ संबंध भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ संबद्धता भारतीय मजदूर संघ जिला ग्वालियर की ई रिक्शा की समस्याओं को लेकर बैठक संपन्न

महेंद्र शर्मा उपसंपादक
पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। स्मार्ट सिटी ई रिक्शा संघ संबंध भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ संबद्धता भारतीय मजदूर संघ जिला ग्वालियर की एक आवश्यक बैठक विगत दिनों मरघट रोड चार शहर का नाका स्मार्ट सिटी ई रिक्शा स्टैंड पर आहूत की गई जिसमें महानगर में संचालित स्मार्ट सिटी ई-रिक्शा चालक बांधुयो की समस्याओं व शहर में बढ़ रहे प्रदूषण एवं यातायात में बाधित टेंपो, टैक्सी, लोडिंग, 56 सीटर स्कूली बस, शहर में चल रहे कंडम वाहनों से हो रहे यातायात व्यवधान में ,गरीब ई रिक्शा चालकों को बदनाम व टारगेट करके इन्हें शहर से बाहर भगाने व उनके रोजगार पर लात मारने के लिए कुछ तथाकथित संगठन आंदोलन व ज्ञापन प्रदर्शन कर रहे हैं उन आंदोलन प्रदर्शन को देखते हुए एक आवश्यक बैठक में निर्णय लिया गया की आगामी 11 सितंबर 2023 को फूलबाग मैदान में दोपहर 1ः00 से महानगर के सभी ई रिक्शा चालक बंधु एकत्रित होते हुए कलेक्ट्रेट की ओर जंगी प्रदर्शन के साथ अनुशासन के साथ आगे बढ़ेंगे शासन प्रशासन से आग्रह है शहर में बढ़ रहे प्रदूषण व ध्वस्त यातायात अव्यस्ताओं में स्मार्ट सिटी ई-रिक्शा संघ संबद्धता भारतीय मजदूर संघ शहर के यातायात व्यवस्थाओं में सहयोग करते हुए शहर के बढ़ रहे प्रदूषण को कम करने में सरकार का एवं शासन प्रशासन का सहयोग कर रहा है हमारी शासन प्रशासन से मांग है कि शहर में बढ़ रहे प्रदूषण व यातायात अव्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए स्मार्ट सिटी ई रिक्शा को शहर में सुचारू रूप से

संचालित रखा जावे व प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए टेंपो, विक्रम, लोडिंग, चल रहे कंडम वाहन ,56 सीटर बसे इन पर महानगर शहर में प्रतिबंध करते हुए इनको निर्धारित बंद पड़े मार्गो पर शहर से बाहर रूटों पर चलाया जाए स्मार्ट सिटी ई रिक्शा चालक संघ शहर के लाँयन ऑर्डर में यातायात व्यवस्थाओं में प्रदूषण को रोकने में शासन प्रशासन का सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहेगा सभी स्मार्ट सिटी ई रिक्शा संघ महानगर ग्वालियर के समस्त ई रिक्शा चालक बंधुओ से अपील करता है कि ग्वालियर कलेक्ट्रेट पर होने वाले जंगी प्रदर्शन मैं फूलबाग से कलेक्ट्रेट की ओर चलो में दिनांक 11 सितंबर 2023 दिन सोमवार को अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर जंगी प्रदर्शन एवं ज्ञापन को सफल बनाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें अपील करने वालों में योगेश कुमार शर्मा (प्रदेश अध्यक्ष) भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ संबंध तथा भारतीय मजदूर संघ से संबंध स्मार्ट सिटी ई रिक्शा संघ के अध्यक्ष राम लखन झा, महामंत्री अरुण कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष घनश्याम सिंह तोमर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल किशोर शुक्ला, मंत्री भरत गौर, रविंद्र जोशी, मनीष चौहान ,राम रतन राजपूत, आदि लोगों ने शहर के समस्त ई रिक्शा चालक बंधुयो से अपील करता है कि आगामी 11 सितंबर2023 के आंदोलन को अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर सफल बनावे भारत माता की जय युक्त जानकारी योगेश कुमार शर्मा प्रदेश अध्यक्ष भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर संघ के द्वारा दी गई।

जन आशिर्वाद यात्रा में वारिस डाली खलल.अपने नेता से मिलने भीगते रहे समर्थक

रीवा। गुढ़ विधानसभा मे निकल रही भाजपा की जन आशीर्वाद यात्रा मे जारी है वर्षा और वही भारतीय जनता पार्टी के जन आशीर्वाद यात्रा के कार्यकर्ता बरसात मे भीगते हुए कर रहे अपने नेता से मिलने का इंतजार करते रहे जहा यात्रा मे पुलिस पूरी तरह से सजग रही इस दौरान गुढ़ तहसील प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम सभा मे भाजपा नेत्री श्रीमती विमलेश मिश्रा, नारायण मिश्रा एवं नगर परिषद गुढ अध्यक्ष डॉ अर्चना सिंह, मंण्डल अध्यक्ष कपूरचन्द्र सोनी, मंण्डल उपाध्यक्ष सूर्यप्रकाश पाण्डेय (लाला) डॉ. अयोध्या प्रसाद तिवारी, ओम त्रिपाठी, इन्द्रेश मिश्रा सहित गुढ़ नगर के स्थानीय नेताओं के अलावा यात्रा की सुरक्षा व्यवस्था के लिए डी यस पी, एस डी ओ पी, गुढ़ थाना प्रभारी विकास कपीस के साथ कई थाने के थाना प्रभारी व पुलिस बल तैनात रहे।

जन्मदिन पर विशेष

आंचलिक पत्रकारिता के पुरोधा श्री मिजाजी लाल जैन चंबल की पत्रकारिता के सिरमौर रहे हैं

महेंद्र शर्मा उपसंपादक
पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। जैन साहब चंबल की पत्रकारिता के सिरमौर रहे हैंउन्होंने सिद्धांतों के आधार पर रिपोर्टिंग की है। दुबली-पतली काया के साथ गहरा श्याम वर्ण ,साधारण सी पेंट-क़मीज़ और अतिसाधारण कपड़े के जूते , शर्ट की जेब में जितने भी समा सकते हों उतने काग़ज़ , पेन , बिखरे हुए बाल, दिन भर पैदल चलने वाले, दबकर और डरकर रहने वाले मिजाजी लाल जी आज 73 वर्ष पूरे कर रहे हैं। सदैव हँसना-मुस्कुराना, सामने वाले के समक्ष अज्ञानी बने रहकर घटना की तह तक पहुँच जाना उनकी पत्रकारिता का कौशल है। मुखबिर की तरह जानकारी एकत्रित कर उसका निष्पक्ष विश्लेषण कर देने में वे माहिर हैं। वर्तमान के पत्रकारों की

तरह उनमें लटके-झटके नहीं है। दिखावा नहीं है। अपने पिता स्व. श्री बाबूलाल जी जैन की समाजवादी पत्रकारीय परंपरा को उन्होंने जीवंत बनाये रखा है। पत्रकारिता के पितृ पुरुष स्व. श्री काशीनाथ जी चतुर्वेदी को अपना आराध्य मानकर उनके आदर्शों पर चल रहे हैं। श्री मिजाजी लाल जी नैष्ठिक और ईमानदार पत्रकारिता के जीवंत अवशेष हैं।

जन आशीर्वाद यात्रा में प्रभात झा, नरोत्तम मिश्रा एव मनोज तिवारी गोहद में

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद। जनता का आशीर्वाद लेने के लिए प्रदेश नेतृत्व द्वारा आयोजित जन आशीर्वाद यात्रा गोहद की सीमा में बिरखड़ी गांव से 10 सितंबर को प्रवेश करेगी, उक्त जानकारी पत्रकार वार्ता में जन आशीर्वाद यात्रा प्रभारी कमल सिंह तोमर, विधानसभा संयोजक रामबाबू उपाध्याय, मंच प्रभारी चन्द्रशेखर शर्मा, जिला मंत्री अर्चना शर्मा,

मीडिया प्रभारी सौरभ पांडे ने दी। सिंचाई विभाग विश्राम गृह पर आयोजित पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए यात्रा प्रभारी कमल सिंह तोमर ने बताया कि केंद्र की नरेंद्र मोदी व प्रदेश की शिवराज सरकार द्वारा अनेक जन कल्याणकारी योजना आरम्भ की है। उनके कियानवयन से हर व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। यात्रा के उद्देश्य जनता का आशीर्वाद प्राप्त कर 2023 विधानसभा चुनाव में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाना है। जन आशीर्वाद यात्रा ग्वालियर भिण्ड रोड पर बिरखड़ी गांव से प्रवेश करेगी। यहां भव्य स्वागत किया जाएगा, यात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए नया बस स्टैंड गोहद पर सभा मे परिवर्तित होगी। सभा को पूर्व राज्य सभा सदस्य प्रभात झा, गृहमंत्री डॉ नरोत्तम मिश्रा एव भोजपुरी फिल्मों के कलाकार व दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी सम्बोधित करेंगे।

एशियाई टेबल टेनिस- सुतीर्था ने अपने से बेहतर रैंकिंग की खिलाड़ी को हराया

प्योंगचांग (दक्षिण कोरिया)। भारत की सुतीर्था मुखर्जी ने यहां अपने से अधिक रैंकिंग की खिलाड़ी जु यू चेन को हराकर एशियाई टेबल टेनिस चैंपियनशिप के महिला एकल के अगले दौर में प्रवेश किया। दुनिया के 104वें नंबर की भारतीय खिलाड़ी ने चीनी ताइपे की 40वीं रैंकिंग वाली चेन के खिलाफ पहला गेम गंवाने के बाद शानदार वापसी करके 10-12, 11-8, 11-7, 11-7 से जीत दर्ज की। भारत की चोटी की खिलाड़ी मनिका बत्रा ने हालांकि थाईलैंड की जिन्रिपा सॉवेटा को वॉकओवर दे दिया। एक अन्य भारतीय खिलाड़ी अयहिका मुखर्जी ने नेपाल की सुवाल सिक्का को 11-2, 11-0, 11-1 से हराकर अगले दौर में जगह बनाई। श्रीजा अकुला दुनिया की आठवें नंबर की खिलाड़ी जापान की मीमा इतो के सामने खास चुनौती पेश नहीं कर पाई और 5-11, 6-11, 9-11 से हार गईं। चीन की विश्व में दूसरे नंबर की खिलाड़ी चेन मेंग ने भारत की दिया चितले को आसानी से 11-3, 11-6, 11-8 से पराजित किया। इस बीच मानव ठक्कर और मानुष शाह ने अब्दुलअज़ीज़ अनोबोव और कुटबिडिलो तेशाबोएव की उज़्बेकिस्तान जोड़ी को हराकर पुरुष युगल के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। महिला युगल में अयहिका और सुतीर्था की जोड़ी ने कजाकिस्तान की एंजेलिना रोमानोव्सकाया और सरविनोज मिर्कादिरोवा को 11-1, 13-11, 10-12, 11-7 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। टीम स्पर्धाओं में भारतीय पुरुष टीम ने कांस्य पदक जीतकर अपने अभियान का अंत किया था।

भारत बहुत बड़ी भूल करेगा अगर...' : गंभीर ने टीम चयन पर दी चेतावनी

नई दिल्ली। क्रिकेट विश्व कप के लिए टीम इंडिया की घोषणा हो चुकी है लेकिन अभी भी बड़ा सवाल नंबर पांच को लेकर बना हुआ है। केएल राहुल पिछले कुछ समय से भारत की वनडे टीम में पांच नंबर पर खेल रहे हैं। लेकिन इस नंबर पर ईशान किशन पिछले कुछ महीने से प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में

क्रिकेट फैंस भी नंबर 5 पर ईशान की फेवर लेते दिख रहे हैं। 5वें नंबर पर केएल राहुल होने चाहिए या फिर ईशान किशन। इस मुद्दे पर गौतम गंभीर और मोहम्मद कैफ के बीच बहस हुई। गंभीर का मानना ??है कि भारत को वनडे टीम में राहुल की जगह ईशान को न चुनकर 'गलती' से बचना चाहिए। गंभीर ने कहा कि अगर भारत केएल राहुल से पहले ईशान किशन को नहीं खिलाता है तो भारत बहुत बड़ी गलती करेगा। गंभीर ने अपनी बात समझाते हुए कहा कि ईशान ने पिछली कुछ एकदिवसीय पारियों में जो निरंतरता दिखाई है, चाहे वह सलामी बल्लेबाज के रूप में हो या मध्य क्रम में, उन्हें टीम में जगह मिलती है। गंभीर बोले- मुद्दा यह है कि जब आप विश्व कप जीतने के लिए तैयारी कर रहे होते हैं, तो आप नाम नहीं देखते हैं, आप उनके फॉर्म से आकलन करते हैं। आप उस खिलाड़ी को चुनते हैं जो अच्छा प्रदर्शन कर सकता है और आपको विश्व कप जिता सकता है। बहस के दौरान, गंभीर ने कैफ से यहां तक ????कहा था कि अगर विराट कोहली या रोहित शर्मा जैसे किसी खिलाड़ी ने इशान की तरह लगातार मैचों में अर्धशतक बनाए होते तो वह राहुल के चयन के लिए बल्लेबाजी करते। उन्होंने कहा- ईशान ने अभी ज्यादा वनडे क्रिकेट नहीं खेला है, आप कह रहे हैं कि केएल राहुल को उनसे पहले खेलना चाहिए।

कोलंबो में तेज बारिश, भारतीय टीम ने किया इंडोर नेट्स में अभ्यास

कोलंबो। पाकिस्तान के खिलाफ 10 सितंबर को एशिया कप के सुपर चार चरण में मुकाबला करने के लिए भारतीय टीम नेट्स पर जमकर पसीना बहा रही है। कोलंबों में हो रही बरसात के चलते भारतीयों ने इंडोर नेट्स पर अभ्यास किया। मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौर की अगुवाई में हार्दिक पंड्या, श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव, शुभमन गिल, केएल राहुल और शार्दुल ठाकुर ने जमकर पसीना बहाया। एशिया कप दल से जुड़ने के बाद केएल राहुल ने पहली बार नेट पर अभ्यास किया। अभ्यास के दौरान राहुल सहज दिखे। उन्होंने अच्छी टाइमिंग के साथ कुछ बेहतरीन पंच और ड्राइव लगाए।

राहुल ने इस साल मार्च में अपना आखिरी वनडे खेला था और आईपीएल के दौरान दाहिनी जांघ में चोट लगने के कारण उन्हें मई में सर्जरी से गुजरना पड़ा था। चोट से उबरने के बाद एशिया कप दल में उनका चयन हुआ था, लेकिन एक छोटी चोट के कारण उन्हें एशिया कप के ग्रुप मुकाबले से बाहर होना पड़ा था। 2019 विश्व कप के बाद से राहुल ने वनडे में 55.64 की औसत से रन बनाए हैं। विकेटकीपर बल्लेबाज के रूप में तो उनका औसत 97.61 का हो जाता है।

मेग लैनिंग वेस्टइंडीज श्रृंखला से बाहर, हीली और पेरी की वापसी

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम की कप्तान मेग लैनिंग को वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी टी20 और एकदिवसीय घरेलू श्रृंखला से बाहर कर दिया गया है और इसके बजाय वह घरेलू क्रिकेट के माध्यम से धीरे-धीरे वापसी करने के लिए तैयार हैं क्योंकि वह एक अज्ञात बीमारी से उबर रही हैं।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) द्वारा शुक्रवार को जारी की गई दो टीम सूचियों में लैनिंग का नाम नहीं था, जिसमें एलिसा हीली टूटी हुई उंगली से उबरने के बाद स्टैंड-इन कप्तान के रूप में लौटीं। हीली इस चोट के कारण अगस्त में आयरलैंड के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के आखिरी वनडे और महिला हंड्रेड से बाहर थीं। एलिसे पेरी भी घुटने की चोट के कारण आयरलैंड और द हंड्रेड के खिलाफ आखिरी वनडे में नहीं

खेल पाई लेकिन अब वह भी वापसी कर रही हैं। लैनिंग ने फरवरी में दक्षिण अफ्रीका में टी20 विश्व कप के बाद से ऑस्ट्रेलिया के लिए नहीं खेला है और मार्च में डब्ल्यूपीएल के बाद से उन्होंने बिल्कुल भी नहीं खेला है क्योंकि वह एक अज्ञात बीमारी के कारण पूरे यूके दौरे से बाहर हो गई थीं। वह हाल के सप्ताहों में विक्टोरिया के साथ प्रशिक्षण पर लौट आई हैं और अपनी राज्य टीम के साथ क्रॉंसलैंड के सनशाइन कोस्ट की प्री-सीजन दौरे पर हैं। हीली को उम्मीद थी कि लैनिंग अक्टूबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेलने के लिए तैयार होंगी। हालाँकि, वह वेस्टइंडीज के खिलाफ दो श्रृंखलाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार नहीं है। हालाँकि, वह वेस्टइंडीज के खिलाफ दो श्रृंखलाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार नहीं हैं। ऑस्ट्रेलिया टीम के डॉक्टर पिप इंगे ने पुष्टि की कि लैनिंग की वापसी के लिए कोई तारीख तय नहीं की गई है, लेकिन यह घरेलू क्रिकेट में होने की संभावना है। इंगे ने कहा, मेग अच्छी प्रगति कर रही है लेकिन प्रतिस्पर्धी क्रिकेट के लिए अनुपलब्ध है। मेग की खेल में वापसी के लिए कोई तारीख निर्धारित नहीं की गई है, हालांकि, हम घरेलू क्रिकेट के माध्यम से धीरे-धीरे वापसी की उम्मीद करते हैं। सीए मेडिकल स्टाफ मेग के साथ मिलकर काम करना जारी रखेगा और उसकी उपलब्धता पर अपडेट उचित समय पर प्रदान किया जाएगा।

ऑस्ट्रेलियाई टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 श्रृंखला खेलेगी, जिसका पहला मैच 1 अक्टूबर को नॉर्थ सिडनी ओवल में और अंतिम दो मैच 12 और 14 अक्टूबर को मेलबर्न में होंगे। इसके बाद दोनों टीमों के बीच 8 अक्टूबर से ब्रिस्बेन में तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला शुरू होगी। एकदिनी श्रृंखला के बाकी दो मैच 12 और 15 अक्टूबर को खेले जाएंगे।

वेस्टइंडीज के खिलाफ श्रृंखला के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम इस प्रकार है-

ऑस्ट्रेलियाई महिला टी-20 टीमः एलिसा हीली (कप्तान), ताहलिया मैक्ग्रा (उप-कप्तान), डार्सी ब्राउन, एशले गार्डनर, किम गार्थ, ग्रेस हैरिस, जेस जोनासेन, फोएबे लिचफील्ड, बेथ मूनी, एलिसे पेरी, मेगन शुट्ट, एनाबेल सदरलैंड जॉर्जिया वेयरहैम।

ऑस्ट्रेलियाई महिला एकदिवसीय टीमः एलिसा हीली (कप्तान), ताहलिया मैक्ग्रा (उप-कप्तान), डार्सी ब्राउन, एशले गार्डनर, किम गार्थ, जेस जोनासेन, अलाना किंग, फोएबे लिचफील्ड, बेथ मूनी, एलिसे पेरी, मेगन शुट्ट, एनाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वेयरहैम।

विश्व कप के बाद घुटने की सर्जरी कराएंगे बेन स्टोक्स, भारत दौरे से चूक सकते हैं

लंदन। इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान और प्रमुख ऑलराउंडर बेन स्टोक्स ने संकेत दिया है कि इस साल के अंत में विश्व कप के बाद उनके घुटने की सर्जरी हो सकती है, जिसके कारण वह जनवरी और मार्च 2024 के बीच भारत दौरे से बाहर हो सकते हैं। स्टोक्स, जो इस पूरी गर्मी में अपने बाएं घुटने में क्रोनिक टेंडोनाइटिस से परेशान थे, ने पांच टेस्ट मैचों में सिर्फ 29 ओवर फेंके, ने हाल ही में इंग्लैंड के सफेद गेंद के कप्तान जोस बटलर के आह्वान के बाद आगामी विश्व कप के लिए अपने संन्यास के फैसले को पलट दिया है।

विश्व कप में केवल एक बल्लेबाज के रूप में वापसी करने के लिए सहमत होने के बाद अब देखना है कि स्टोक्स, अगले साल की शुरुआत में भारत के पांच टेस्ट मैचों के दौरे के लिए केवल एक बल्लेबाज के रूप में खेलेंगे, या सर्जरी कराएं और दौरा पूरी तरह से छोड़ देंगे। घरेलू धरती पर 2019 विश्व कप में इंग्लैंड के लिए खेलने के बाद पहली बार 50 ओवर के क्रिकेट में उन्होंने गुरुवार को बीबीसी से बातचीत में

कहा, विश्व कप शब्द काफी प्रेरणादायक हैं। इसमें जाने और संभावित रूप से लगातार विश्व कप जीतने में सक्षम होने का विचार बड़ी चीजों में से एक था। 32 वर्षीय खिलाड़ी ने टूर्नामेंट के बाद अपने घुटने को ठीक करने की योजना के बारे में भी बात की और कहा, विश्व कप के बाद कुछ होने की संभावना होगी।

हालाँकि, उन्होंने कहा कि यह उनके लिए निर्णय लेने का सही समय नहीं है क्योंकि इंग्लैंड विश्व कप से पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला के लिए तैयार है। स्टोक्स ने कहा,विश्व कप के बाद काफी लंबा समय है। मेरी कुछ विशेषज्ञों के साथ अच्छी बातचीत हो रही है। वहाँ एक योजना है. जब हम वह करते हैं जो हमें खुद को एक वास्तविक ऑलराउंडर बनने का मौका देने के लिए करने की आवश्यकता होती है तो एक समय आएगा जब मैं कह सकता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं। मैं अगली गर्मियों में एक वास्तविक ऑलराउंडर के रूप में खेलना चाहता हूं। यह सर्दी इस विश्व कप को खेलने और फिर इस घुटने को ठीक करने के बारे में है।

हालाँकि विश्व कप और इंग्लैंड के भारत दौरे के बीच दो महीने का समय है, अगर स्टोक्स भारत दौरे पर पूरी तरह से एक बल्लेबाज के रूप में खेलने का फैसला करते हैं और उसके बाद सर्जरी कराते हैं, तो वह आईपीएल और घरेलू गर्मियों में चूक जाएंगे।

स्टोक्स, जिन्होंने कहा कि एशेज श्रृंखला के दौरान दर्द के कारण खेलने के बाद उन्होंने पूरी तरह से गेंदबाजी छोड़ने पर विचार किया है, उन्होंने यह भी कहा कि वह इंग्लैंड के खिलाड़ियों के साथ आकर्षक टी20 सौदे लेने के लिए टेस्ट न खेलने को लेकर बहुत सहज थे।

ग्रैंड स्लैम युगल फाइनल में पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बने रोहन बोपन्ना

न्यूयॉर्क। भारत के 43 वर्षीय अनुभवी टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने अपना स्वप्निल प्रदर्शन जारी रखते हुए गुरुवार को अपने ऑस्ट्रेलियाई साथी मैथ्यू एबडेन के साथ यूएस ओपन के पुरुष युगल फाइनल में प्रवेश किया। इंडो-ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी ने पियरे-ह्यूजेस हर्बर्ट और निकोलस माहुत की फ्रांसीसी जोड़ी पर सीधे सेटों में जीत दर्ज की। ग्रैंड स्लैम पुरुष युगल फाइनल में रोहन बोपन्ना की यह दूसरी उपस्थिति होगी।छठी वरीयता प्राप्त इंडो-ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी, जो इस साल विंबलडन चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में पहुंची थी, ने हार्ड कोर्ट मेजर के सेमीफाइनल में फ्रांसीसी जोड़ी को 7-6 (7-3), 6-2 से हराया।

इस फाइनल के साथ ही, 43 वर्षीय रोहन ओपन युग में ग्रैंड स्लैम फाइनल में पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी भी बन गए। बोपन्ना ने कनाडा के डैनियल नेस्टर के रिकॉर्ड को दो महीने से हरा दिया, जो मेजर फाइनल में खेलते समय 43 साल और 4 महीने के थे।13 साल पहले 2010 में रोहन बोपन्ना अपने पाकिस्तानी जोड़ीदार ऐसाम-उल-हक कुरेशी के साथ अपने पहले ग्रैंड स्लैम फाइनल में उतरे थे। यूएस ओपन फाइनल में बोपन्ना और एबडेन का मुकाबला लुइस आर्मस्ट्रांग स्टेडियम में राजीव राम और जो सैलिसबरी की अमेरिकी जोड़ी से होगा। इंडो-ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी पहले ही 2023 में दो खिताब दोहा में एटीपी कतर ओपन और इंडियन वेल्स मास्टर्स जीत चुकी है।

मैच के बाद साक्षात्कार में बोपन्ना ने कहा, मुझे लगता है कि निर्णायक मोड़ तब था जब हम पहले सेट में 4-2 से पीछे थे और एक ब्रेक प्वाइंट को डबल ब्रेक डाउन में जाने से बचाया। इससे हम मैच में बने रहे। हमें भी भीड़ से बहुत ऊर्जा मिली। 13 साल बाद फाइनल मेंवापस आकर खुश हूं। मुझे न्यूयॉर्क पसंद है।

धोनी नहीं, यह वर्तमान क्रिकेटर सबसे ज्यादा पसंद है विराट कोहली को

न्यूयॉर्क। भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली ने एक इंटरव्यू के दौरन बताया है कि उनका पसंदीदा वर्तमान क्रिकेटर कौन है। हर कोई जानता है कि विराट के कुछ पसंदीदा सेवानिवृत्त खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर, एबी डिविलियर्स, एमएस धोनी और हर्शेल गिब्स थे। लेकिन जब उनसे मौजूदा पसंदीदा खिलाड़ी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने एक गैर-भारतीय खिलाड़ी का जिक्र किया। कोहली ने कहा कि उनके पसंदीदा क्रिकेटर इंग्लिश टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स हैं। उनसे यह भी पूछा गया कि उनका क्रिकेट आदर्श कौन है। कोहली ने जवाब दिया कि बड़े होने के दौरान उनके क्रिकेट आदर्श सचिन तेंदुलकर थे। कोहली से उनके जर्सी नंबर 18 की कहानी के बारे में पूछा गया तो कोहली ने कहा कि कोई कहानी नहीं है। जब वह अंडर-19 भारतीय टीम में थे तब उन्हें यह नंबर मिला था और वह इससे जुड़े रहे। उनसे उनके पसंदीदा शॉट के बारे में भी पूछा गया, जिस पर उन्होंने कहा कि यह बाएं हाथ के स्पिनर के खिलाफ कवर के ऊपर से इनसाइड आउट शॉट उनका फेवरेट है।

एफएसडीएल ने इंडियन सुपर लीग के लिए वायाकॉम18 के साथ किया करार

मुंबई। फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड (एफएसडीएल) ने 2023-24 और 2024-25 सीजन के लिए वायाकॉम18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ करार किया है। इंडियन सुपर लीग का 10वां सीजन 21 सितंबर को कोच्चि के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में प्रतिद्वंद्वी केरला ब्लास्टर्स एफसी और बेंगलुरु एफसी के बीच ब्लॉकबस्टर मुकाबले के साथ शुरू होगा।

वायाकॉम18 डिजिटल और लीनियर टीवी प्लेटफॉर्म पर भारत की शीर्ष स्तरीय फुटबॉल लीग, आईएसएल के लिए विशेष मीडिया अधिकार धारक होगा। लीग के विविध दर्शकों को ध्यान में रखते हुए फुटबॉल प्रशंसकों के लिए प्रसारण कई भाषाओं में उपलब्ध होगा, और जियो सिनेमा पर भी मुफ्त स्ट्रीम किया एगा। पिछले एक दशक में, आईएसएल भारत में मैदान के अंदर और बाहर फुटबॉल के समग्र विकास के पीछे एक प्रेरक शक्ति साबित हुआ है। विकास के अपने अगले चरण में वायाकॉम18 अपनी मजबूत डिजिटल क्षमताओं के साथ आईएसएल को बड़े दर्शकों तक ले जाने और नए जमाने के खेल प्रशंसकों के साथ जुड़ने के लिए सही भागीदार होगा।

वायाकॉम18 का डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म जियोसिनेमा, जो आईएसएल को मुफ्त में स्ट्रीम करेगा, फीफा विश्व कप कतर 2022ङ और टाटा आईपीएल जैसी संपत्तियों की लाइवस्ट्रीमिंग के माध्यम से एक अग्रणी देखने का अनुभव लेकर आया है और यह आईएसएल के लिए भी इसी तरह का अनुभव लाना जारी रखेगा। फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड के प्रवक्ता ने कहा, हमें इंडियन सुपर लीग के लिए अपने मीडिया अधिकार भागीदार के रूप में वायाकॉम18 को पाकर खुशी है।

7 क्रिकेट एक्सपर्ट को इस टीम इंडिया में कुछ न कुछ खामियां नजर आईं

लंदन। क्रिकेट विश्व कप 2023 नदजीक आते ही क्रिकेट एक्सपर्ट भी सक्रिय हो गए हैं। बीते दिनों बीसीसीआई ने विश्व कप के लिए टीम इंडिया का ऐलान किया था जिसके बाद से एक्सपर्ट इस टीम के पॉजीटिव और निगेटिव ढूंढने में लगे हुए हैं। इसी बीच स्टार स्पोर्ट्स की ओर से 8 बड़े क्रिकेट एक्सपर्ट को लेकर विश्व कप के लिए चुनी गई टीम इंडिया पर राय मांगी तो सिर्फ सौरव गांगुली को छोड़कर बाकी 7 क्रिकेटरों को इस टीम में कुछ न कुछ खामियां नजर आई।

पहले देखें यह है विश्व कप के लिए टीम इंडिया में-

रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या, विराट कोहली, शुभमन गिल, इशान किशन, सूर्याकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, शार्दुल ठाकुर, रविंद्र जडेजा, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल।

इन एक्सपर्ट को यह दिखी कमियां

संजय बांगड़ : पूर्व बल्लेबाज ने पूरी टीम में शार्दुल ठाकुर की

उपस्थिति पर ऊंगली उठाई है। उन्होंने शार्दुल की बजाय टीम में अर्शदीप सिंह को रखने की बात कही।

संज मांजरेकर : पूर्व बल्लेबाज की टीम में ईशान किशन, अक्षर पटेल और शार्दुल ठाकुर नहीं है। उन्होंने इनकी बजाय युजी चहल और अर्शदीप सिंह को वरीयता दी है।

के श्रीकांत : पूर्व बल्लेबाज को टीम में श्रेयस अय्यर की उपस्थिति अच्छी नहीं लगी। वह खुश है कि टीम में युजी चहल और अर्शदीप का चुना नहीं हुआ।

मैथ्यू हेडन : पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज हेडन को टीम इंडिया में कुलदीप यादव की एंट्री अच्छी नहीं लगी। उन्होंने युजी चहल और अर्शदीप सिंह पर भी भरोसा नहीं जताया।

पीयूष चावला : पूर्व गेंदबाज चावला ने टीम में श्रेयस अय्यर और अक्षर पटेल की उपस्थिति पर ऊंगली उठाई। उन्होंने युजी चहल को टीम में शामिल करने की मांग की।

टॉम मूडी: पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान ने टीम इंडिया में सूर्यकुमार यादव के होने पर आपत्ति जताई है। उन्होंने टीम में युजी चहल को भी जगह दी है।

एमएसके प्रसाद : पूर्व सिलेक्टर ने टीम में ईशान किशन और शार्दुल ठाकुर के होने पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने भी युजी चहल का समर्थन किया है।

सौरव गांगुली : एकमात्र गांगुली ही बीसीसीआई द्वारा चुनी गई टीम से संतुष्ट है। उनका मानना है कि यह परफेक्ट कंबीनेशन है।

विश्व कप से पहले राहुल द्रविड़ ने दिए सूर्यकुमार यादव को टिप्स, फॉर्म में लौटने की उम्मीद

कोलंबो। क्रिकेट विश्व कप 2023 के लिए टीम इंडिया की घोषणा हो चुकी है। टीम अभी कोलंबो में है जहां वह पाकिस्तान के साथ होने वाले मुकाबले की तैयारी कर रही है। 10 सितंबर को यह मुकाबला होना है। क्योंकि इस समय श्रीलंका में भारी बारिश हो रही है इसलिए भारत ने इनडोर नेट सत्र का विकल्प चुना।

इस बीच बीसीसीआई ने टीम इंडिया के प्रैक्टिस सेशन की कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की जिसमें टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ अंडर-रडार सूर्यकुमार यादव के साथ समय बिताते हुए देखे। सूर्यकुमार को आईसीसी क्रिकेट विश्व कप 2023 के लिए 15 सदस्यीय सूची में नामित किया गया है, जो कुछ प्रशंसकों और विशेषज्ञों के लिए एक झटका है। सूर्या अपने टी-20 फॉर्म को वनडे में दोहराने में सक्षम नहीं हैं, यही वजह है कि उनके चयन पर कुछ सवाल उठे हैं। प्रशंसकों ने संजू सैमसन और

तिलक वर्मा से पहले स्काई को तरजीह देने के लिए अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति की भी आलोचना की। बीसीसीआई के ट्विटर हैंडल ने तस्वीरों की एक श्रृंखला पोस्ट की जिसमें खिलाड़ियों को नेट्स पर जमकर पसीना बहाते देखा जा सकता है।

बता दें कि आईसीसी विश्व कप 5 अक्टूबर से शुरू हो रहा है, जिसमें भारत 8 अक्टूबर को अपने पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया से भिड़ेगा। स्काई के प्लेइंग इलेवन में होने के बावजूद, वह शुरुआत के लिए पहली पसंद नहीं है, क्योंकि उसे ईशान किशन और केएल से कड़ी टक्कर का सामना करना पड़ेगा।

राजस्थान रॉयल्स की बड़े ब्रिटिश काऊंटी क्लब पर नजर, दिया 260 करोड़ का ऑफर

जयपुर। आईपीएल फ्रेंचाइजी मालिकों का विदेशी लीगों में निवेश करना तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है। मुंबई और कोलकाता अमरीका की मेजर लीग , टी 10 लीग, सीपीएल में अपनी टीमें खरीद चुके हैं। इसी बीच राजस्थान रॉयल्स ने पहली बार इंग्लिश काउंटी क्लब यॉर्कशायर को खरीदने के लिए 260 करोड़ रुपए की पेशकश की है। यदि यॉर्कशायर इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है, तो यह अंतरराष्ट्रीय मालिक पाने वाला पहला इंग्लिश क्लब बन जाएगा। बायआउट ऑफर लगभग 25 मिलियन पाऊंड (260 करोड़ रुपए) है, जिससे राजस्थान रॉयल्स को हेडिंग्ले का पूर्ण नियंत्रण लेने और अन्य अनुमतियां मिल जाएंगी। कुछ दिन पहले यॉर्कशायर ने सार्वजनिक किया था कि वे कर्ज में डूबे हैं और क्लब को बेचने पर विचार कर रहे हैं।

अल्कराज और मेदवेदेव अमेरिकी ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे

न्यूयॉर्क। दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज और रूस के तीसरी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव ने मौसम की विकट परिस्थितियों के बावजूद सीधे सेटों में जीत दर्ज करके अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई जहां वे एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे। पिछली बार के चैंपियन अल्कराज ने जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव को 6-3, 6-2, 6-4 से पराजित किया। वह अब अमेरिकी ओपन में लगातार दूसरे खिताब के करीब पहुंच गए हैं। रोजर फेडरर ने 2004 से 2008 तक यहां लगातार पांच खिताब जीते थे। इसके बाद पुरुष एकल में कोई भी खिलाड़ी अपने खिताब का बचाव नहीं कर पाया। इससे पहले मेदवेदेव ने भीषण गर्मी के बीच हमवतन आंद्रे रुबलेव को हराकर चौथी बार अमेरिकी ओपन के पुरुष एकल के सेमीफाइनल में जगह बनाई। फ्लशिंग मीडोज पर तापमान 35 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था और ऐसे में खेलना आसान नहीं था। मेदवेदेव ने मैच के दौरान 'इनहेलर' का उपयोग किया और चिकित्सक की मदद भी ली। वह हालांकि रुबलेव को 6-4, 6-3, 6-4 से हराने में सफल रहे। मेदवेदेव ने मैच के बाद आगाह किया कि तेज गर्मी के कारण खिलाड़ियों को विकट समस्या से गुजरना पड़ सकता है। उन्होंने कहा, 'ऐसी परिस्थितियों कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में किसी खिलाड़ी की जान भी जा सकती है। मैं नहीं जानता कि ऐसी परिस्थितियों में हम क्या कर सकते हैं क्योंकि शायद हम टूर्नामेंट को चार दिन के लिए नहीं रोक सकते हैं।

सरकार ने डार्क पैटर्न के तैयार मसौदा दिशा-निर्देशों पर सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने 'डार्क पैटर्न' को रोकने और नियमन के लिए तैयार मसौदे के दिशा-निर्देशों पर लोगों से सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी हैं। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने इस मसौदा दिशा-निर्देशों को तैयार किया है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने गुरुवार को जारी बयान में बताया कि देश में डार्क पैटर्न के खराब असर से ग्राहकों को बचाने के लिए एक मसौदा तैयार है। आधिकारिक बयान के अनुसार मंत्रालय ने 30 दिनों के भीतर 5 अक्टूबर तक मसौदा दिशा-निर्देशों पर सार्वजनिक टिप्पणियां और सुझाव मांगे हैं। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय द्वारा जारी मसौदा दिशा-निर्देशों में ऑनलाइन मंचों द्वारा अपनाई जा रही विभिन्न भ्रामक प्रथाओं को सूचीबद्ध किया गया है, जो उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ हैं। ऑनलाइन ग्राहकों को धोखा देने या उनकी पसंद में हेरफेर करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति को 'डार्क पैटर्न' कहते हैं। मंत्रालय के मुताबिक प्रस्तावित दिशा-निर्देश विक्रेताओं और विज्ञापनदाताओं सहित सभी लोगों और ऑनलाइन मंचों पर लागू किए जाएंगे। उपभोक्ता मंत्रालय ने बताया कि वह उपभोक्ता हितों की रक्षा करने एवं एक निष्पक्ष और पारदर्शी बाजार को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। मंत्रालय ने कहा कि प्रस्तावित दिशा-निर्देश उद्योग को और मजबूत करेंगे तथा उपभोक्ता के हितों की रक्षा करेंगे।

MINISTRY OF CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION

सरकार के एथनॉल पर जोर से बलरामपुर चीनी मिल्स वृद्धि को लेकर आश्वस्त

नई दिल्ली। चीनी के अधिक उत्पादन के लिए अनुकूल माहौल और एथनॉल पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान देने के कारण बलरामपुर चीनी मिल्स लिमिटेड अपनी मजबूत दो अंक की वृद्धि को बनाए रखने को लेकर उत्साहित है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा कि नवीकरणीय ईंधन पर सरकार के जोर से कंपनी को ऊर्जा क्षेत्र में महत्वपूर्ण विविधता लाने में मदद मिल रही है। बलरामपुर चीनी मिल्स की प्रवर्तक और बिजनेस लीड (नई पहल) अवंतिका सरावगी ने कहा कि चीनी की बढ़ती कीमतें चीनी मिलों के लिए लागत के दबाव का प्रतिबिंब हैं और यह नवंबर तक कम होना शुरू हो जाएगा। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा, बेहतर प्राप्तियों के कारण चालू वर्ष और अगले साल के लिए राजस्व वृद्धि 12 से 15 प्रतिशत के बीच रहने की उम्मीद है। मौजूदा अनुमान के आधार पर यह वृद्धि लगभग 10 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक विवेक सरावगी ने कहा, ''बेहतर प्राप्ति 10 विनिर्माण संयंत्रों में 11 करोड़ क्विंटल गन्ने की की पेराई संपत्तियों के बेहतर इस्तेमाल के कारण होगी। दूसरा कारक खेत स्तर पर आधुनिक वैज्ञानिक हस्तक्षेप है, जो उपज और प्राप्ति को बढ़ावा देने में मदद कर रहा है।'' वर्ष 2022-23 में पेराई 1,030 करोड़ क्विंटल की हुई थी, जो वर्ष 2021-22 से 16 प्रतिशत अधिक है। उन्होंने कहा कि 2020-21 और2021-22 में प्राप्ति बहुत कम थी, क्योंकि भीषण बाढ़ आई थी। अधिकारी ने कहा कि अवंतिका सरावगी प्रवर्तकों की अगली पीढ़ी का चेहरा हैं जो 5.5 लाख किसानों के साथ उत्पादन और गुणवत्ता हस्तक्षेप पर काम कर रही हैं।

रुपया 10 पैसे टूटकर 83.23 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर पर

नई दिल्ली। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में बृहस्पतिवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 10 पैसे की गिरावट के साथ 83.23 प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल और अमेरिकी मुद्रा में मजबूती से रुपये में लगातार चौथे दिन गिरावट देखने को मिली। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल मूल्यों में तेजी से भी निवेशकों की कारोबारी धारणा प्रभावित हुई। कारोबारियों ने कहा कि घरेलू शेयर बाजार में मजबूती के रुख ने रुपये की गिरावट पर कुछ अंकुश लगा दिया। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के विदेशी मुद्रा और सर्राफा विश्लेषक, गौरांग सोमैया ने कहा, ''चीन के निराशाजनक व्यापार संतुलन आंकड़ों के बाद रुपये पर दबाव और कमजोरी बनी हुई है। चीनी युआन में कमजोरी के कारण भी रुपये में कमजोरी आई है, जो पिछले एक साल में सबसे निचले स्तर पर आ गया है। उन्होंने कहा, ''आज, निवेशकों का ध्यान अमेरिका के साप्ताहिक बेरोजगारी दावों के आंकड़ों पर होगा।'' अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.15 पर खुला और दिन के कारोबार के दौरान यह 83.12 से 83.23 के दायरे में घूमने के बाद अंत में अपने पिछले बंद भाव से 10 पैसे टूटकर 83.23 प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली पहुंचीं क्रिस्टालिना जॉर्जीवा

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रबंध निदेशक (एमडी) क्रिस्टालिना जॉर्जीवा गुरुवार को नई दिल्ली पहुंचीं। जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने नई दिल्ली पहुंची आईएमएफ प्रमुख का पारंपरिक तौर पर स्वागत हुआ।

क्रिस्टालिना जॉर्जीवा भारत की अध्यक्षता में 9-10 सितंबर तक होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगी। इस शिखर सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में होगा। जी-20 सदस्य देश वर्तमान में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 85 फीसदी, वैश्विक व्यापार का 75 फीसदी से अधिक और दुनिया की 60 फीसदी से ज्यादा आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत को पिछले वर्ष दिसंबर में जी-20 की अध्यक्षता मिली थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 10 सितंबर को ब्राजील के राष्ट्रपति को जी-20 अध्यक्ष पद की कमान सौंपेंगे। जी-20 समूह में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) शामिल हैं।

कच्चा तेल 90 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में कुछ नरमी आई है। ब्रेंट क्रूड मामूली गिरावट के साथ 90 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 87 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के भाव में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शुक्रवार को राजधानी दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के पांचवें दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.48 डॉलर यानी 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ 89.44 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.57 डॉलर यानी 0.66 फीसदी लुढ़कर 86.30 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

एयर इंडिया ने बैंकॉक एयरवेज के साथ इंटरलाइन साझेदारी की

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एयर इंडिया ने बैंकॉक एयरवेज के साथ इंटरलाइन साझेदारी की है। इससे एयरलाइन के ग्राहकों को थाईलैंड की राजधानी से 10 दक्षिण पूर्व एशियाई गंतव्यों के लिए निर्बाध संपर्क की सुविधा मिलने लगेगी।

एयर इंडिया ने गुरुवार को एक्स पोस्ट पर जारी ट्वीट में बताया कि हमें अपने नवीनतम इंटरलाइन पार्टनर बैंकॉक एयरवेज का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। यह आपके लिए बैंकॉक के माध्यम से थाईलैंड, लाओस और कंबोडिया के 10 अन्य गंतव्यों के लिए सुपर सुविधाजनक कनेक्शन प्रदान करता है। इसकी टिकट बिक्री के लिए बुकिंग अब खुली है। इसके अलावा दोनों विमानन कंपनियों ने एक विशेष प्रोरेट समझौता भी किया है, जो उन्हें एक-दूसरे के नेटवर्क को कवर करने वाले मार्गों पर 'किराया के माध्यम से' फाइल करने की अनुमति देता है। इस व्यवस्था का मतलब होता है कि एक यात्री को अपने यात्रा कार्यक्रम में सभी गंतव्यों को कवर करने वाले एक टिकट के लिए एक ही किराये का भुगतान करना होगा। उल्लेखनीय है कि यह साझेदारी एयर इंडिया के यात्रियों को बैंकॉक एयरवेज के रूट नेटवर्क पर थाईलैंड, लाओस और कंबोडिया के 10 गंतव्यों से एयरलाइन के बैंकॉक, हांगकांग और सिंगापुर गेटवे के माध्यम से सुविधाजनक कनेक्शन लेने में सक्षम बनाएगी। दरअसल, एयर इंडिया दिल्ली और मुंबई से बैंकॉक के लिए दिल्ली, मुंबई और चेन्नई से सिंगापुर के लिए और दिल्ली से हांगकांग के लिए हफ्ते में तीन बार दैनिक उड़ानें संचालित करती है।

क्रिप्टो करेंसी मार्केट में सुस्ती जारी, सपाट स्तर पर प्रमुख आभासी मुद्राएं

मुंबई/नई दिल्ली। क्रिप्टो करेंसी मार्केट में लगातार तीसरे दिन सुस्ती का माहौल बना हुआ है। मार्केट कैप के लिहाज से टॉप-10 में शामिल क्रिप्टो करेंसीज में से 4 मामूली बढ़त के साथ और 6 गिरावट के साथ कारोबार करते नजर आ रही हैं। टॉप 10 में शामिल क्रिप्टो करेंसीज में से आज सिर्फ दो क्रिप्टो करेंसीज में ही 1 प्रतिशत से अधिक की हलचल दर्ज की गई है। इनमें से 1 ग्रीन जोन में और 1 रेड जोन में कारोबार कर रही हैं।

भारत में क्रिप्टो करेंसी का कारोबार करने के लिए अधिकृत एजेंसी कॉइन मार्केट कैप से मिली जानकारी के मुताबिक भारतीय समय के हिसाब से आज शाम 5 बजे तक बिटकॉइन 0.09 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 25,741.03 डॉलर यानी 21.42 लाख रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी क्रिप्टो करेंसी एथेरियम की कीमत आज 0.02 प्रतिशत की कमजोरी के साथ गिर कर 1,630.56 डॉलर के स्तर पर आ गई थी।

एथेरियम के अलावा टेथर 0.01 प्रतिशत, एक्सआरपी 0.43 प्रतिशत, कार्डानो 0.25 प्रतिशत, डोजेकॉइन 0.21 प्रतिशत और सोलाना 1.40 प्रतिशत की कमजोरी के कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर, बिटकॉइन

के अलावा बीएनबी 0.13 प्रतिशत, यूएसडी कॉइन 0.02 प्रतिशत और ट्रॉन 1.02 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। कॉइन मार्केट कैप से मिली जानकारी के मुताबिक पिछले 24 घंटे के कारोबार के दौरान क्रिप्टो करेंसी के ग्लोबल मार्केट कैप में 0.07 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। फिलहाल क्रिप्टो करेंसी का ग्लोबल मार्केट कैप घट कर 1.038 लाख करोड़ डॉलर यानी करीब 86.54 लाख करोड़ रुपये रह गया है। ग्लोबल मार्केट कैप में गिरावट आने के बावजूद पिछले 24 घंटे के दौरान क्रिप्टो करेंसीज के लेन-देन में तेजी दर्ज की गई है। इस अवधि में कुल 2,607 करोड़ डॉलर यानी 2.17 लाख करोड़ रुपये की क्रिप्टो करेंसी की लेन-देन हुई, जो 1 दिन पहले की तुलना में 11.07 प्रतिशत अधिक है। पिछले 24 घंटे के कारोबार के दौरान क्रिप्टो करेंसी मार्केट में बिटकॉइन की स्थिति भी 0.01 प्रतिशत कमजोर हुई है, जिसके कारण इस आभासी मुद्रा की मार्केट हिस्सेदारी घट कर 48.20 प्रतिशत हो गई है।

ग्लोबल मार्केट कैप में गिरावट आने के बावजूद पिछले 24 घंटे के दौरान क्रिप्टो करेंसीज के लेन-देन में तेजी दर्ज की गई है।

भारत ने अमेरिका के आधा दर्जन उत्पादों से अतिरिक्त शुल्क हटाया

नई दिल्ली। जी-20 शिखर सम्मेलन के पहले भारत ने बड़ा कदम उठाया है। भारत ने अमेरिका के चना, दाल और सेब सहित करीब आधा दर्जन उत्पादों पर 2019 में लगाया गया अतिरिक्त शुल्क हटा दिया है।

आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक भारत ने यह कदम अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आने से पहले उठाया है। वित्त मंत्रालय ने पांच सितंबर को इससे संबंधित एक अधिसूचना जारी की है। बाइडन शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बातचीत भी करेंगे। अधिसूचना के मुताबिक इन उत्पादों में चना, मसूर (दाल), सेब, छिलके वाले अखरोट और ताजे या सूखे बादाम के साथ ही छिलके वाले बादाम पर शुल्क हटाने की जानकारी दी गई है। अमेरिका द्वारा भारत के कुछ इस्पात और एल्युमीनियम उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने के फैसले के जवाब में भारत ने 2019 में अमेरिका के 28 उत्पादों पर यह शुल्क लगाया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जून महीने में अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर दोनों देशों ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में छह विवादों को खत्म करने और अमेरिकी उत्पादों पर प्रतिक्रिया स्वरूप लगाए गए शुल्क को हटाने का फैसला लिया था। इस समझौते के तौर पर भारत चने पर 10 फीसदी, मसूर की दाल पर 20 फीसदी, ताजे और सूखे बादाम पर सात रुपये प्रति किलोग्राम, छिलके वाले बादाम पर 20 रुपये प्रति किलोग्राम, अखरोट पर 20 प्रतिशत और ताजा सेब पर 20 फीसदी शुल्क हटाएगा।

यूरोपीय संघ ने गूगल, ऐपल, अमेजन को नए डिजिटल नियम के दायरे में रखा

लंदन। यूरोपीय संघ (ईयू) ने ऐपल, अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक और टिकटॉक जैसी प्रौद्योगिकी आधारित कंपनियों को नए डिजिटल नियमों के दायरे में लाने की बुधवार को घोषणा की। यूरोपीय संघ में ऑनलाइन कंपनियों की कारोबारी क्षमता को नियंत्रित करने के इरादे से डिजिटल बाजार अधिनियम लाया गया है। इसके तहत इन छह वैश्विक कंपनियों को ऑनलाइन गेटकीपर के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिसकी वजह से उन पर अधिकतम निगरानी रखी जाएगी। यूरोपीय संघ की कार्यकारी शाखा यूरोपीय आयोग के आयुक्त एवं डिजिटल नीति के प्रभारी थिएरी ब्रेटन ने कहा, अब खेल के नियम बदलने का वक्त आ गया है। हमें यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी ऑनलाइन मंच, चाहे वह कितना भी बड़ा हो, ढंग से बर्ताव करे

टमाटर की ऊंची कीमतों के कारण अगस्त में शाकाहारी थाली की कीमत 24 प्रतिशत बढ़ी : रिपोर्ट

नई दिल्ली। टमाटर की ऊंची कीमतों के कारण अगस्त में शाकाहारी थाली की कीमत एक साल पहले की तुलना में 24 प्रतिशत बढ़ गई है। एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। हालांकि, क्रिसिल मार्केट इंटेलिजेंस एंड एनालिटिक्स की मासिक 'रोटी चावल दर' रिपोर्ट में बृहस्पतिवार को कहा गया कि जुलाई की तुलना में लागत में थोड़ी कमी आई है। अगस्त में उच्च आधार पर शाकाहारी थाली की कीमत में माह-दर-माह मामूली गिरावट आई है और मुख्य रूप से टमाटर की कीमतों में मजबूती के कारण इस वित्त वर्ष में दूसरी बार इसमे सालाना आधार पर बढ़ोतरी हुई है। इसमें कहा गया है कि मांसाहारी थाली की कीमत साल-दर-साल आधार पर 13 प्रतिशत बढ़ी है।

शाकाहारी थाली की कीमत में 24 प्रतिशत की वृद्धि में से 21

प्रतिशत वृद्धि का कारण केवल टमाटर की कीमत है, जो साल-दर-साल 176 प्रतिशत बढ़कर अगस्त में 102 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई, जबकि पिछले साल अगस्त में यह 37 रुपये प्रति किलोग्राम थी।रिपोर्ट के अनुसार, मांसाहारी थाली के लिए, वृद्धि कम थी क्योंकि ब्रॉयलर की कीमत, जो लागत में 50 प्रतिशत से अधिक का योगदान करती है, में सालाना आधार पर एक से तीन प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इसमें कहा गया है कि अगस्त में एक साल पहले की तुलना में वनस्पति तेल की कीमत में 17 प्रतिशत और आलू की कीमत में 14 प्रतिशत की गिरावट आई, जिससे थाली की लागत कुछ हद तक कम हो गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि सितंबर में थाली की कीमतें गिर सकती हैं क्योंकि टमाटर की खुदरा कीमत महीने-दर-महीने आधी होकर 51 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई हैं। इसके अलावा, 14.2 किलोग्राम एलपीजी सिलेंडर की कीमत, जो अगस्त में 1,103 रुपये थी, सितंबर से घटाकर 903 रुपये कर दी गई है, इससे उपभोक्ताओं को अधिक राहत मिल सकती है।

सरकार 2019 के चुनावों से पहले आरबीआई से तीन लाख करोड़ रुपये निकालना चाहती थी : विरल आचार्य

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व डिप्टी गवर्नर विरल आचार्य ने कहा है कि वर्ष 2018 में सरकार में बैठे कुछ लोगों ने चुनाव से पहले 'लोकलुभावन' खर्चों के लिए केंद्रीय बैंक से दो-तीन लाख करोड़ रुपये हासिल करने के लिए उसपर 'धावा' बोलने की कोशिश की थी जिसका पुरजोर विरोध हुआ था। आचार्य ने अपनी किताब में लिखा है कि 2019 के आम चुनावों से पहले सरकार अपने लोकलुभावन खर्चों की भरपाई के लिए आरबीआई से यह बड़ी रकम निकालने की कोशिश में थी। लेकिन आरबीआई इसके पक्ष में नहीं था जिसकी वजह से सरकार के साथ उसके मतभेद बढ़ गए थे। उस समय सरकार ने आरबीआई को निर्देश देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) अधिनियम की धारा सात का इस्तेमाल करने की भी चेतावनी दी थी। आरबीआई के तत्कालीन डिप्टी गवर्नर आचार्य ने यह मामला सबसे पहले 26 अक्टूबर, 2018 को एक व्याख्यान में उठाया था। अब यह प्रकरण उनकी किताब 'क्रेस्ट फॉर रिस्टोरिंग फाइनेंशियल स्टेबिलिटी इन इंडिया' की नयी प्रस्तावना में भी प्रमुखता से उजागर हुआ है। इसमें सरकार की कोशिश को 'केंद्र द्वारा राजकोषीय घाटे का पिछले दरवाजे से मौद्रीकरण' बताया गया है। आचार्य ने वर्ष 2020 में पहली बार प्रकाशित अपनी किताब के नए संस्करण की प्रस्तावना में कहा, 'नौकरशाही और सरकार में बैठे रचनात्मक मस्तिष्क' वाले कुछ लोगों ने पिछली सरकारों के कार्यकाल में आरबीआई के पास जमा हुई बड़ी रकम को वर्तमान सरकार के खाते में स्थानांतरित करने की एक योजना तैयार की थी।' दरअसल, आरबीआई हर साल अपना लाभ सरकार को पूरी तरह देने के बजाय उसका एक हिस्सा अलग रख देता है। यही हिस्सा कई वर्षों में एक बड़ी राशि में तब्दील हो चुका था। आचार्य ने कहा कि 2016 की नोटबंदी से पहले के तीन वर्षों में केंद्रीय बैंक ने सरकार को रिकॉर्ड लाभ अंतरण किया था। लेकिन नोटबंदी के साल में नोटों की छपाई पर खर्च बढ़ने से केंद्र को अधिशेष हस्तांतरण कम हो गया था। ऐसी स्थिति में सरकार ने 2019 के चुनावों से पहले अपनी मांगों को बढ़ा दिया था। आचार्य ने कहा कि आरबीआई से अधिक लाभांश निकालने की कोशिश एक तरह से राजकोषीय घाटे का 'पिछले दरवाजे से मौद्रीकरण' था।

असल में अपने विनिवेश लक्ष्य से चूकने के बाद सरकार का राजकोषीय घाटा बढ़ गया था। उन्होंने सरकार की मंशा पर तंज कसते हुए कहा, 'जब केंद्रीय बैंक के बही-खाते पर धावा बोला जा सकता है और बढ़ते राजकोषीय घाटे को मौद्रीकृत किया जा सकता है तो फिर चुनावी वर्ष में लोकलुभावन खर्चों में कटौती क्यों की जाए?' आचार्य ने मौद्रिक नीति, वित्तीय बाजार, वित्तीय स्थिरता और अनुसंधान के प्रभारी डिप्टी गवर्नर के रूप में तीन साल का कार्यकाल पूरा होने से छह महीने पहले ही जून, 2019 में पद छोड़ दिया था।

उन्होंने आरबीआई को सरकार की तरफ से निर्देश देने के लिए पहले कभी भी उपयोग में नहीं लाई गई आरबीआई अधिनियम की धारा सात को उल्लिखित किए जाने के विवाद का भी जिक्र किया है। उन्होंने कहा कि पूर्व गवर्नर बिमल जालान के मातहत बनी समिति की अनुशंसा के बाद सरकार ने इस 'विचार' के अधिकांश असली योजनाकारों को दरकिनार कर दिया।

सरकार की योजनाओं से वैश्विक गुणवत्ता मानकों को पूरा कर पा रहा है खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र : पटेल

नई दिल्ली। खाद्य प्रसंस्करण राज्यमंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने कहा है कि सरकार की पहल से खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को वैश्विक गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को पूरा करने में मदद कर रही हैं। मंत्री ने बृहस्पतिवार को तीन दिन के 'अनुटेक' (इंटरनेशनल फूडटेक इंडिया एंड अनुफूड इंडिया 2023) में कहा कि प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना (पीएमकेएसवाई), प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम (पीएमएफएमई) योजना, और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय द्वारा सक्रिय रूप से समर्थित तीन महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं। उन्होंने कहा, ''ये पहल हमारे उद्योग को वैश्विक गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को पूरा करने में मदद करती हैं, जिससे संपूर्ण खाद्य प्रसंस्करण मूल्य श्रृंखला को लाभ होता है।''उन्होंने कहा, ''सरकार ने पीएमकेएसवाई को बनाए रखने के लिए 4,600 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं, और हाल ही में पीएमकेएसवाई को अतिरिक्त 920 करोड़ रुपये का आवंटन, इस क्षेत्र की वृद्धि के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।'' इसी कार्यक्रम में एमएसएमई मंत्रालय में संयुक्त सचिव (एसएमई) मर्सी एपाओ ने कहा कि सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यम देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 30 प्रतिशत का योगदान देते हैं और लक्ष्य एमएसएमई को विश्वस्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ-साथ 2047 तक भारत में दूसरा सबसे बड़ा रोजगार सृजनकर्ता क्षेत्र बनाना है। शुरू हुए तीन दिन के अनुटेक - इंटरनेशनल फूडटेक इंडिया में ब्राजील, फिलिपीन, तुर्की, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, इटली और ईरान के विशेष मंडपों के साथ 28 से अधिक देशों की 800 से अधिक कंपनियों की भागीदारी देखी गई। उद्योग के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की देश के कुल खाद्य बाजार में 32 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

एक नजर...

भाजपा, प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव के नेतृत्व में आज प्रदेश में बढ़ते अपराध, महिला असुरक्षा को लेकर राज्यपाल को ज्ञापन सौपेंगे

11.30 बजे राज भवन पहुंचेंगे भाजपा के वरिष्ठ नेतागण

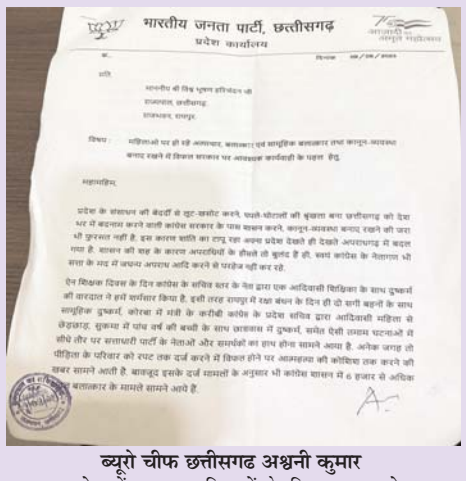

भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़
प्रदेश कार्यालय

ब्यूरो चीफ छत्तीसगढ अश्वनी कुमार

रायपुर। प्रदेश में लगातार महिलाओं के खिलाफ बढ़ रहे अपराध, अनाचार, सामूहिक अनाचार,कुशासन इत्यादि की घटनाओं को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वय पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह जी, राज्यसभा सांसद सरोज पांडे जी, पूर्व मंत्री व विधायक बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर सांसद सुनील सोनी सहित सांसद , विधायक वरिष्ठ भाजपा नेतागण आज 9 सितंबर ,11:30 बजे राज भवन पहुंचकर राज्यपाल महोदत को ज्ञापन सौपेंगे।

सांसद मनोज तिवारी ग्वालियर चंबल संभाग के दौरे पर, जनआशीर्वाद यात्रा में भाग लेंगे

ग्वालियर । भाजपा वरिष्ठ नेता सांसद मनोज तिवारी 10 सितंबर को दिल्ली से ट्रेन से ग्वालियर आएंगे। सांसद तिवारी सुबह 9:15 पर ग्वालियर रेलवे स्टेशन पहुंचेंगे, वहां से सुबह 10 बजे कार से सड़क मार्ग द्वारा मेहगांव पहुंचकर 11 बजे जन आशीर्वाद यात्रा में भाग लेंगे। सांसद तिवारी दोपहर 12:30 बजे कर से सड़क मार्ग द्वारा मेहगांव से गोहद के लिए प्रस्थान करेंगे। सांसद तिवारी दोपहर 1बजे गोहद में सभा में भाग लेंगे तथा 3 बजे गोहद से लहार के लिए प्रस्थान कर शाम 4 बजे लहार पहुंचेंगे।सांसद तिवारी शाम 4:30 बजे लहार में जन आशीर्वाद यात्रा की आमसभा में भाग लेंगे। सांसद तिवारी शाम 6 बजे लहार से ग्वालियर के लिए प्रस्थान करेंगे तथा शाम 7:30 बजे श्री तिवारी ग्वालियर से दिल्ली के लिए रवाना होंगे।

महिलाओं के लिये सुरक्षित पर्यटन स्थल विषय पर हुई सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

ग्वालियर । मध्य प्रदेश घूमने आने वाले देश-दुनिया के पर्यटक सुरक्षा की चिंता किए बगैर चिंता मुक्त होकर पर्यटन का आनंद ले सकें। इस बात को ध्यान में रखकर मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड द्वारा महिलाओं के लिये सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना के अंतर्गत प्रदेश के 20 संकुल अंतर्गत 50 पर्यटन स्थलों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल में 10 हजार और आत्मरक्षा में 40 हजार महिलाएं प्रशिक्षण ले रही है। पर्यटन स्थलों पर आने वाली महिला पर्यटकों में सुरक्षा और सहजता का भाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा महिलाओं के लिये सुरक्षित पर्यटन परियोजना का संचालन किया जा रहा है। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड की महिलाओं हेतु सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना के अंतर्गत रागिनी फाउंडेशन द्वारा टाउन हॉल महाराज बाड़ा ग्वालियर में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई । सुश्री शिल्पी माथुर के नेतृत्व में यह प्रस्तुति हुई। उन्होंने राई ,बधाई, लांगुरिया और लोकगीतों की प्रस्तुति दी। लोकगीतों के माध्यम से इतिहास के बारे में बताया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम से रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने की बात कही। इस अवसर पर जानकारी दी गई कि ग्वालियर, मितावली व पढ़ावली इत्यादि स्थानों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर इन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा दिया जायेगा।

सीएम चौहान 10 सितम्बर को ग्वालियर आयेंगे, जनदर्शन यात्रा में होंगे शामिल

ग्वालियर। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 10 सितम्बर को ग्वालियर प्रवास पर आयेंगे। मुख्यमंत्री चौहान इस दिन प्रातः 11.30 बजे राजमाता विजयाराजे सिंधिया विमानतल महाराजपुरा पहुँचेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुख्यमंत्री चौहान विमानतल से अचलेश्वर महादेव मंदिर पहुँचेंगे और वहाँ पूजा-अर्चना करने के बाद ÷जन दर्शन यात्रा÷ में शामिल होंगे। इसके बाद दोपहर लगभग 1.30 बजे फूलबाग मैदान पहुँचकर राज्य स्तरीय महिला हितग्राही सम्मेलन में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री अपरान्ह लगभग 3 बजे चेम्बर ऑफ कॉमर्स कार्यालय में पहुँचकर चेम्बर के सदस्यों की बैठक में भाग लेंगे। इसके बाद अपरान्ह 4 बजे मेला मैदान के हैलीपेड पहुँचकर हैलीकॉप्टर द्वारा मुरार जनपद पंचायत के ग्राम दंगियापुरा जायेंगे।

भाजपा ने प्रदेश में लगातार बड़ रहे अपराधों को लेकर राज्यपाल को प्रदेश सरकार के खिलाफ ज्ञापन सौंपा

संवैधानिक संरक्षक होने के नाते राज्यपाल से अयोग्य, अक्षम और भ्रष्ट सरकार पर कार्रवाई का निर्देश देकर जन-सुरक्षा प्रदेश को एवं अपराधियों-आतंकियों के चंगुल से मुक्त कराने का आग्रहप्रदेश अध्यक्ष अरुण साव समेत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सांसद डॉ. सरोज पांडेय, सांसद सुनील सोनी, पूर्व विस अध्यक्ष द्वय धरमलाल कौशिक व गौरीशंकर अग्रवाल, पूर्व सांसद-विधायक, मौजूदा विधायक, प्रदेश प्रवक्ता, पार्टी, मोर्चों व मीडिया विभाग के पदाधिकारी शामिल रहेकांग्रेस सरकार की प्राथमिकता में केवल लूट और घोटालों से अपना और आलाकमान का घर भरना रह गया, अतः कानून-व्यवस्था बनाए रखने में इस सरकार की रत्तीभर भी दिलचस्पी नहीं भाजपा

ब्यूरो चीफ छत्तीसगढ अश्वनी अवस्थी

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव के नेतृत्व में प्रदेश की राजधानी से लेकर हर शहर-नगर और गाँवों में लगातार बड़ रहे अपराधों के परिप्रेक्ष्य में शनिवार को राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन से मिलकर प्रदेश के कुशासन बड़ते अपराधों, महिला असुरक्षा आदि मुद्दों पर प्रदेश की कांग्रेस सरकार के खिलाफ ज्ञापन सौंपा। भाजपा ने प्रदेश के संवैधानिक संरक्षक होने के नाते राज्यपाल से महिलाओं पर हो रही दरिंदगी जैसे छेड़छाड़, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और बलात्कार के बाद हत्या, मासूम बच्चियों के साथ अनाचार को रोकने में अयोग्य, अक्षम और भ्रष्ट सरकार पर कार्रवाई के लिए निर्देश देकर जनता की सुरक्षा प्रदेश को एवं अपराधियों-आतंकियों के चंगुल से मुक्त कराने का आग्रह किया।भाजपा ने राज्यपाल हरिचंदन को सौंपे गए अपने ज्ञापन में कहा है कि प्रदेश के संसाधन की बेदर्दी से लूट-खसोट करने, घपले-घोटालों की श्रृंखला बना छत्तीसगढ़ को देशभर में बदनाम करने वाली कांग्रेस सरकार के पास शासन करने, कानून-व्यवस्था बनाए रखने की जरा भी फुरसत नहीं है। इस कारण शांति का टापू रहा अपना प्रदेश देखत-ही-देखते अपराधगढ़ में बदल गया है। शासन की शह के कारण अपराधियों के हौसले तो बुलंद हैं ही, स्वयं कांग्रेस के नेतागण भी सत्ता के मद में जघन्य अपराध आदि करने से परहेज नहीं कर रहे। ऐन शिक्षक दिवस के दिन कांग्रेस के सचिव स्तर के एक नेता द्वारा एक आदिवासी शिक्षिका के साथ दुष्कर्म की वारदात ने हमें शर्मसार किया है। इसी तरह रायपुर से लगे मंदिरहसौद में रक्षाबंधन के दिन ही दो सगी बहनों के साथ सामूहिक दुष्कर्म, कोरबा में मंत्री के करीबी कांग्रेस के प्रदेश सचिव द्वारा आदिवासी महिला से छेड़छाड़, सुकमा में पांच वर्ष की बच्ची के साथ छात्रावास में दुष्कर्म, समेत ऐसी तमाम घटनाओं में सीधे तौर पर सत्ताधारी पार्टी के नेताओं और समर्थकों का हाथ होना सामने आया है। अनेक जगह तो पीड़िता के परिवार को रपट तक दर्ज करने में विफल होने पर आत्महत्या की कोशिश तक करने की खबर सामने आई है। अलावे इसके, दर्ज मामलों के अनुसार भी कांग्रेस शासन में 6 हजार से अधिक केवल बलात्कार के मामले सामने आये हैं।भाजपा ने अपने ज्ञापन में राज्यपाल हरिचंदन को अवगत कराया कि स्थिति इतनी विकराल है कि कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में कांग्रेस की दलित नेत्री के साथ भी छेड़छाड़ एवं लज्जा भंग की कोशिश राष्ट्रीय नेत्री के सचिव द्वारा की गई। न केवल बलात्कार, बल्कि हत्या, लूट, डकैती, तस्करी, मानव तस्करी समेत तमाम तरह के सिंडीकेट यहां पनप गए हैं जो शासकीय शह पर हर तरह के अपराध को अंजाम दे रहे हैं। चूँकि कांग्रेस सरकार की प्राथमिकता में केवल लूट और घोटाले से अपना और आलाकमान का घर भरना रह गया है, अतः कानून-व्यवस्था बनाए रखने में इस सरकार की रत्तीभर भी दिलचस्पी नहीं है। भाजपा ने प्रदेश के संवैधानिक संरक्षक होने के नाते राज्यपाल से आग्रह किया है कि महिलाओं पर हो रही दरिंदगी जैसे छेड़छाड़, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और बलात्कार के बाद हत्या, मासूम बच्चियों के साथ अनाचार को रोकने में अयोग्य, अक्षम और भ्रष्ट सरकार पर कार्रवाई के लिए निर्देश देकर जनता की सुरक्षा एवं अपराधियों-आतंकियों के चंगुल से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

राज्यपाल ने राज्य सरकार से रिपोर्ट मंगाने और आवश्यक कार्रवाई की पहल का भरोसा दिलाया :साव

बाद में पत्रकारों से चर्चा करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि हमने राज्यपाल को प्रदेश की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया है। रक्षाबंधन के दिन दो बेटियों के साथ, शिक्षक दिवस के दिन आदिवासी शिक्षिका के साथ, राजधानी के पॉश इलाके देवेंद्रनगर में महिला के साथ सामूहिक अनाचार की घटनाएँ होती हैं, सुकमा में एक पाँच वर्ष की मासूम बच्ची के साथ अनाचार किया जाता है, और प्रदेश की कांग्रेस सरकार हाथ-पर-हाथ धरे बैठी है। श्री साव ने कहा कि राज्यपाल ने भाजपा के ज्ञापन के परिप्रेक्ष्य में इस विषय पर संज्ञान लेकर राज्य सरकार से रिपोर्ट मंगाने और आवश्यक कार्रवाई की पहल करने का भरोसा दिलाया है।

प्रदेश में जुँआ-सट्टा और शराब की वजह से आपराधिक घटनाएँ बढ़ रही हैं : डॉ. रमन

भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने पत्रकारों से चर्चा के दौरान कहा कि आज जो छत्तीसगढ़ में कानून-व्यवस्था की चिंताजनक स्थिति है, उससे हम सभी ने मिलकर राज्यपाल को अवगत कराया है। कानून-व्यवस्था की स्थिति इतनी जर्जर हो गई है कि रोज दिनदहाड़े खुलेआम बलात्कार, हत्या, चोरी, लूट, हिंसा की वारदातें घट रही हैं। जशपुर में एक आदिवासी शिक्षिका के साथ सामूहिक बलात्कार की शर्मनाक घटना हुई। राजधानी के देवेंद्रनगर, राजधानी से लगे मंदिर हसौद में सामूहिक बलात्कार की घटनाओं से प्रदेश शर्मसार है। बस्तर में तो हालात इतने शर्मनाक हैं कि सुकमा के पोटाकेबिन में पाँच साल की बच्ची के साथ हुए अनाचार के मामले में न तो विधिसम्मत एफआईआर हुई, न ही कार्रवाई हुई। डॉ. सिंह ने कहा कि यह बेहद दुःखद है कि इस प्रकार की घटनाओं को लगातार बड़ावा मिल रहा है। प्रदेश सरकार और पुलिस प्रशासन के संरक्षण में इस प्रकार के आपराधिक व असामाजिक तत्व बच रहे हैं। इन सारे पहलुओं को लेकर हम सबने राज्यपाल से भेंट करके आग्रह किया है कि वे प्रदेश सरकार से इन घटनाओं पर सख्ती से जवाब मांगें। डॉ. सिंह ने कहा कि प्रदेश में जुँआ-सट्टा और शराब की वजह से इस प्रकार की आपराधिक घटनाएँ बढ़ रही हैं और इन पर अंकुश लगाने में कांग्रेस की यह प्रदेश सरकार बुरी तरह विफल रही है।

डॉ. सरोज ने पूछाः क्या खड़गे छत्तीसगढ़ की बिगड़ी कानून-व्यवस्था, बलात्कार, हत्याओं का मॉडल पूरे देश में बताएंगेड़ भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सांसद डॉ. सरोज पांडेय ने राज्यपाल से भेंट के बाद पत्रकारों को कहा कि छत्तीसगढ़ में जिस प्रकार कानून-व्यवस्था की खराब हो रही है, हमने राज्यपाल को इस बारे में बताया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे पर भी निशाना साधते हुए डॉ. (सुश्री) पांडेय ने सवाल दागा कि कांग्रेस अध्यक्ष छत्तीसगढ़ मॉडल को सब जगह बताकर आगे बड़ाने की बातें कर रहे हैं, तो क्या कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे छत्तीसगढ़ में बिगड़ी हुई कानून-व्यवस्था, बलात्कार, हत्याओं के मॉडल को पूरे देश में बताएंगेड़ क्या इसकी अन्य राज्यों से तुलना करेंगेड़ डॉ. (सुश्री) पांडेय ने कहा कि छत्तीसगढ़ दौरे पर आए कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे से उन्होंने (डॉ. पांडेय ने) 9 सवाल किए थे, उन प्रश्नों से वे भागते रहे और उनका कोई जवाब नहीं दिया।

जी-20 सम्मेलन के जरिए एक विश्व शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना रहा – अग्रवाल

भाजपा के वरिष्ठ विधायक व पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने जी-20 सम्मेलन के मद्देनजर पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि यह सम्मेलन भारत की ख्याति पूरे विश्व में फैलाएगा। भारत ने इस सम्मेलन का नेतृत्व करके जी-20 को आर्थिक के साथ-साथ अब मानव आधारित उद्देश्यों से जोड़ने का कार्य भी किया है। मानवमात्र की स्वास्थ्य सुविधाएँ, आर्थिक, हाईजेनिक और जलवायु परिवर्तन आदि नए विषयों को इस सम्मेलन से जोड़कर बता दिया है कि भारत ही पूरे विश्व की, मानवता की चिंता करने वाला देश है। श्री अग्रवाल ने कहा कि आज अमेरिका को भी यह मानना पड़ रहा है कि बिना भारत के सहयोग के पूरे विश्व में सुधार नहीं आ सकता। भारत इस सम्मेलन के जरिए एक विश्व शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना रहा है।

प्रतिनिधिमंडल में शामिल रहे भाजपा नेता-भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री साव के नेतृत्व में इस प्रतिनिधिमंडल में भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सांसद डॉ. सरोज पांडेय, सांसद सुनील सोनी, विधायक व पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष व विधायक धरमलाल कौशिक, विधायक व पूर्व मंत्री पुन्नूलाल मोहिले, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल, पूर्व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व पूर्व सांसद विक्रम उसेंडी, प्रदेश प्रवक्ता व विधायक रंजना साहू, विधायक डमरूधर पुजारी, प्रदेश भाजपा कोषाध्यक्ष नंदन जैन, प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष लक्ष्मी वर्मा, पूर्व विधायक श्रीचंद सुन्दरानी, पूर्व विधायक नंदें साहू, सरगुजा संभाग प्रभारी संजय श्रीवास्तव, प्रदेश प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता, प्रदेश प्रवक्ता संदीप शर्मा, प्रदेश प्रवक्ता दीपक म्हस्के, प्रदेश प्रवक्ता नलिनीश ठोकने, प्रदेश प्रवक्ता अमित साहू, अजजा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष विकास मरकाम, अजा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष नवीन मार्कण्डेय, प्रदेश मीडिया सह प्रभारी अनुराग अग्रवाल शामिल थे। भाजपा ने प्रदेश में महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों, गैंगरेप की बड़ती घटनाओं पर गहरी चिंता जताते हुए कहा है कि छत्तीसगढ़ अब पूरी तरह अपराधगढ़ बन गया है और प्रदेश जंगलराज कायम हो गया है। राज्यपाल हरिचंदन को भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने इस बात से भी अवगत कराया कि प्रदेश सरकार अपनी प्रशासनिक क्षमता खो चुकी है।

गोहद पुलिस ने 5 हजार के इनामी बदमाश को किया गिरफ्तार

धारा 307 के तीन अपराधों में फरार चल रहा था आरोपी

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद। आरोपियों की धरपकड़ अभियान के तहत थाना गोहद पुलिस ने धारा 307 भादवि0 के तीन अपराधों में फरार चल रहे आरोपी राम लखन उर्फ लखना गुर्जर निवासी जिम्मेदार का पुरा को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है।दिनांक 06.03.2023 को थाना प्रभारी गोहद को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम चिलमन का पुरा तरफ फरारी बदमाश मय असला के साथ देखा गया है, जो किसी बड़ी घटना को अंजाम दे सकते है उक्त सूचना से थाना प्रभारी गोहद द्वारा एस.डी.ओ.पी को अवगत कराया गया। एसडीओपी के द्वारा थाना गोहद चौराहा, मौ व मालनपुर थाना प्रभारियों को मय बल के चिलमन पुरा पहुंचने के निर्देश दिये। जिस पर मयबल के एक साथ होकर फरार आरोपी के घर पर दबिस दी गई, तो बदमाश के घर की छत से 6 बदमाश हथियार बंद, उसके गौढा में कूदे गये । सभी बदमाशों के पास 315 बोर की रायफल व अधिया थी। बदमाशों द्वारा करीबन 20 राउण्ड पुलिस पर फायर किये। पुलिस के द्वारा भी आत्मरक्षा में जबाबी फायर किये गये। जिनमें से एक आरोपी को मौके पर गिरफ्तार किया गया तथा शेष आरोपी मौके का लाभ उठाकर सरसों के खेतों में भाग गये। उपरोक्त सभी 06 बदमाशों पर धारा 307, 147, 148, 149, 353 भादवि0 एवं 25, 27 आर्म्स एक्ट की कायमी कर विवेचना में लिया गया। एक आरोपी आरोपी पर शासन द्वारा गिरफ्तारी हेतु 05 हजार रूपये का ईनाम घोषित किया गया है। आरोपी अप.क्र.350/2021 धारा 307,147, 148, 149 भादवि0 एवं अप.क्र. 242 / 2023 धारा 307,34 भादवि0 में भी फरार चल रहा था। जिसे मुखबिर की सूचना पर चितौरा के पास मोनू ढाबा के पास गिरफ्तार किया गया है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी गोहद निरीक्षक राजेश शर्मा, का. उनि वीरेन्द्र कुमार गुप्ता, प्र.आर. अनिल शर्मा, आर0 उग्रसेन, आर. पदम सिहं, आर. कुलदीप सिंह की सराहनीय भूमिका रही।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478